संजय की कलम से ..

सच्ची सेवा

यदि ज्ञान बीज है, योग जल है और दिव्य गुण उसकी देखभाल हैं तो सेवा उसका फल है। सेवा में ही जीवन की सफलता है। सेवा भी एक प्रकार की साधना और तपस्या है। दूसरों का आशीर्वाद लेने का यह सर्वोत्तम उपाय है और आंतरिक खुशी का एक बहुत बड़ा साधन है। त्याग और सेवा – दोनों सहोदर हैं। सच्चा त्याग दूसरों की सेवा और उनके कल्याणार्थ ही होता है। सेवाभाव से रहित मनुष्य स्वार्थी होता है। उदारता, सर्व हितकारी भावना, अपकारी पर भी उपकार की चेष्टा और दान-वृत्ति के बिना सच्ची सेवा का होना असंभव है। सेवा करने वाले को अभिमान छोड़, सहन करना पड़ता है, स्वयं को निमित्त मान नम्र बनना होता है। उसे निन्दा और स्तुति से ऊपर उठ अपने कर्त्तव्य ही की धुन लगी रहती है। वह आराम को भी हराम समझता है। जिसका जीवन सार्वजनिक और सेवामय होता है, उसमें गुणों का विकास होता है। कई गुण तो ऐसे हैं जो सेवा-कार्य के बिना अंकुरित ही नहीं होते। सेवा ही एक 'महायज्ञ' है जिसमें मनुष्य अपने सर्वस्व की आहुतियाँ डालकर दूसरों के सुख का साधन रचता है। सेवाभाव वाला योगी ही अथक, निद्राजीत, निर्लोभी, नष्टोमोह: और निर्वैर होता है। जो सेवा करता है, उसे लेने की आकांक्षा नहीं रहती, उसमें देने ही का भाव बना रहता है। फिर भी यदि कोई उसे दाता मानने लगता है तो उसके नेत्र या तो लज्जा के मारे झुक जाते हैं या उसके हाथ और चक्षु ऊपर प्रभु की ओर इशारा करते हैं।

संसार में अनेक प्रकार की सेवा हो सकती है परन्तु सबसे बड़ी सेवा मनुष्य को बुरे कर्मों से बचाकर उसे अच्छे मार्ग पर लगाना है। किसी मनुष्य को रोटी या वस्त्र देना इतना कठिन नहीं जितना कि उसे पाप के दण्ड से बचाने के लिए 'आत्म-निष्ठ' करना। जल पिलाकर किसी की तृष्णा को तृप्त करना एक अच्छी सेवा है परन्तु आत्मा की 'प्रभु प्राप्ति की तृष्णा तृप्त करना' एक सर्वोच्च सेवा है। किसी मनुष्य को कुछ धन देकर उसकी हालत को सुधारा जा सकता है परन्तु उसे अविनाशी धन देने और योग के आनन्द का सौभाग्य प्राप्त कराने की सेवा कोई विरला ही कर सकता है। किसी के पाँव में चुभा काँटा निकालने की सेवा बहुत कठिन नहीं है परन्तु किसी की बुरी आदतों के काँटें निकालना एक दुरूह कार्य है। किसी को भी कोई कला सिखाना निस्संदेह एक कठोर परिश्रम होता है परन्तु जीवन जीने की कला सिखा देना बड़ा भारी उपकार है। किसी स्नेही को कोई तोहफा देना सहज है परन्तु किसी को दिव्य गुणों के अनमोल रत्नों का स्थायी उपहार दे देना एक बहुत बड़ी और सच्ची सेवा है। ❖

अमृत-सूची

- वृद्धावस्था..*(सम्पादकीय)*..... 2
- ज्ञानामृत *(कविता)*..... 4
- ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा...5
- जीत हमारी ही होगी..... 6
- सचित्र सेवा समाचार..... 7
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 8
- दीपावली का आध्यात्मिक..... 9
- एक दीप जलायें ज्ञान का..... 12
- पुरुषोत्तम संगमयुग..... 13
- क्रोध नहीं, तरस करो..... 15
- मॉरिशियस देश में 16
- श्वेत की शान..... 17
- चोट ने निकाला खोट..... 18
- हिम्मते मर्दा, मददे खुदा..... 19
- करते हैं वादा *(कविता)*..... 20
- धर्म, अधर्म और स्वधर्म..... 21
- चुप पहाड़ और खामोश..... 22
- डूबते को किनारा..... 24
- जीवन सुधर गया *(कविता)*.. 25
- सचित्र सेवा समाचार..... 26
- भौतिक सुख के साधन 28
- नारी लक्ष्मी.. *(कविता)*..... 29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- टू मीट गॉड..... 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय ..✍

वृद्धावस्था की योजना

हम सबने एक कहावत सुनी है – **बचपन खेलकर खोया, जवानी नींद भर सोया, बुढ़ापा देखकर रोया।** इसका अर्थ है – जिसका बाल्यकाल और किशोरावस्था खेलने-कूदने, आवारागर्दी करने में गुज़र जाती है, जवानी भोग-विलास और इंद्रियों के तुष्टिकरण में व्यर्थ चली जाती है, वृद्धावस्था में उसके पास रोने के सिवाय कुछ नहीं बचता। इसके विपरीत जो व्यक्ति बाल्यकाल से ही विद्या अर्जन के साथ-साथ श्रेष्ठ संस्कारों का भी अर्जन करता जाता है; युवावस्था को कड़ी मेहनत, त्याग, परोपकार, दया के कार्यों में गुज़ारता है, निश्चित ही वह वृद्धावस्था में सुख-चैन की अनुभूति करता है। जवानी में कमाये गये पुण्य बुढ़ापे में उसकी छत्रछाया बन जाते हैं।

आज का बोया कल मिलता है

एक नौजवान प्रतिदिन 18 घंटे, देश और समाज की सेवा में नि:स्वार्थ भाव से लगा रहा था, उससे पूछा गया कि इसके बदले तुम्हें कुछ मिलता नहीं फिर क्यों इस तरह सेवा में लगे रहते हो; खाओ, पीओ, मौज करो। **उसका उत्तर था, मैं मौज ही तो कर रहा हूँ क्योंकि सेवा ही तो मेवा है।** प्रत्यक्ष रूप से तो मुझे कुछ नहीं मिलता लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से इस सेवा से मेरा बहुत पुण्य जमा हो रहा है। मैं आज स्वस्थ हूँ लेकिन आज से 40 वर्ष बाद की अपनी अवस्था को देख सकता हूँ। तब यह त्वचा लटक जायेगी, घुटने साथ नहीं देंगे, दाँत भी अपनी जगह छोड़ देंगे, उस समय आज की गई मेरी यह सेवा छत्रछाया बनकर मुझे सहारा देगी। आज सेवा का बीज बो रहा हूँ, कल वृद्धावस्था में इसका फल अवश्य प्राप्त होगा।

उसकी यह बात सुनकर बहुत अच्छा लगा और साथ में यह ख्याल भी आया कि जिसे जवानी में पुण्य कमाने की आदत पड़ गई, वह बुढ़ापे में अति आवश्यक होने पर ही सेवा की मांग करेगा, नहीं तो अपने एकत्रित मनोबल से, कम से कम सेवा लेकर अधिक से अधिक खुशहाल रहेगा। पुण्य हमारा मनोबल बढ़ाते हैं। वृद्धावस्था शारीरिक क्षरण का नाम है लेकिन मनोबल पर उसका कोई वार नहीं है। एकत्रित मनोबल ही उस समय हमारा सहारा बनता है।

ईश्वर की तरफ मुख करने वाले को सब देते हैं रुख

ब्रह्माकुमारीज़ में सात पुत्रों के एक बुजुर्ग पिता आते थे। सातों पुत्र बहुत अच्छे पद पर थे लेकिन पिताजी को घर से निकाल दिया गया और वे शहर में आकर एक डॉक्टर की दुकान पर कंपाउण्डर के रूप में दवाई-पट्टी आदि की सेवा करके 500 रुपये पगार में जीवन चलाने लगे। ईश्वरीय महावाक्यों में एक दिन आया कि **'मुझे अपना बेटा बना लो तो वृद्धावस्था में मैं तुम्हारी बहुत सेवा करूँगा'** – इस लाइन को सुनकर वृद्ध की आँखों से बहुत पानी गिरा। क्लास का समय पूरा होने के बाद हमने पूछा, आप क्यों रोये? उसने कहा, मेरी दुखती रग पर इन महावाक्यों के माध्यम से अंगुली रखी गई। सात उच्च पदासीन पुत्रों का पिता होते हुए भी स्टोव जलाकर हाथों से खाना बनाता हूँ। हमने उससे कहा, आपका एक आठवां बेटा भी है और वह है भगवान, उसे प्रथम पुत्र का स्थान अपने दिल में दीजिये और अपनी सर्व आशायें उसी पर केन्द्रित कर लीजिये, फिर चमत्कार देखिये। इसके बाद उस बुजुर्ग की ईश्वरीय ज्ञान में लगन बहुत बढ़ गई और उसने अपने मन को बदल लिया। कुछ मास बाद उसके पुत्र आये और बहुत नम्रतापूर्वक निवेदन कर उसे अपने साथ ले गये। जब भगवान को पुत्र बनाया तो लौकिक पुत्र भी सेवादार बन गये। जब तक भगवान की तरफ मुख नहीं था, लौकिक पुत्रों ने भी सही रुख नहीं दिया। यह तो एक मिसाल है। दुनिया में न जाने ऐसे कितने बुजुर्ग हैं, किन-किन परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। **इतना निश्चित है कि ईश्वर की तरफ मुख करने वाले की तरफ दुनिया का भी मुख हो जाता है और जो भगवान से मुख मोड़ लेता है, दुनिया भी उससे मुख मोड़ लेती है।**

अगर उस परम दयालु परमात्मा को केवल मुसीबत आने पर नहीं, पहले से ही अपना साथी बना लिया जाये तो मुसीबतें बिना छुये ही गुज़र जाती हैं।

समय रहते चेत जाइये

जब हम बुजुर्ग हो जाते हैं और हमारे बच्चे बड़े हो जाते हैं तो घर का सारा पैसा, कारोबार, वस्तुएँ अधिकतर बच्चों के अधिकार में आ जाती हैं। उस समय अगर हम कुछ साधन-संपत्ति ईश्वरीय कार्य में लगाना चाहें तो बच्चों की तरफ से रुकावट भी आ सकती है। फिर हमें दुख होता है कि हमारा कमाया हुआ, हमारे बच्चे हमें श्रेष्ठ कार्य में लगाने नहीं देते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जब सब कुछ हमारे हाथ में था, तब हम कहाँ गये थे! अब बच्चों को दोषी ठहराने से क्या होगा, दोषी तो वास्तव में हम हैं जो समय पर नहीं चेते और अगर उस समय से हमने आंशिक धन को पुण्य कार्यों में लगाया होता तो हमारे बच्चे भी उससे सीखे होते और आज वे हमें रोकने की बजाय प्रोत्साहित करते। **इसलिए संसार के बदलते व्यवहार और वातावरण को देखकर शुभ कार्यों के लिए वृद्धावस्था का इंतज़ार नहीं करना चाहिए। आज तो सृष्टि ही बूढ़ी हो गई है, इस पर रहने वाला हर व्यक्ति ही बूढ़ा है। अतः होश संभालते ही पुण्यों की ओर लगन लग जानी चाहिए ताकि किसी के प्रति मन में शिकायत न पालनी पड़े।**

मोह तो ज़हर है

कलियुग की निशानी दिखाते हैं कि एक कुआँ तीन कुओं को पानी से भर देता है और खुद खाली हो जाता है लेकिन जब वही कुआँ उन तीन भरे हुए कुओं से पानी माँगता है तो वे उसकी माँग को ठुकरा देते हैं और कोई दूर का कुआँ उसे बूँद-बूँद पानी दे रहा होता है। कैसी विडंबना है, जिस संतान के लिए तन-मन-धन सब कुछ लुटा दिया, वह संतान रोटी के चंद टुकड़ों के लिए भी माँ-बाप को मोहताज कर देती है। इसका कारण यही है कि हमने संतान की पालना मोह से की, मूल्यों से नहीं। विनोबा भावे की माँ बड़ी साध्वी थी। उनके पिताजी नये-नये लड़कों को घर में ले आते थे। पिताजी को पुण्य मिलता था लेकिन सेवा तो माता को ही करनी पड़ती थी। एक दिन विनोबा भावे ने अपनी माता से कहा, माँ, पिताजी जिस लड़के को लेकर आये हैं, उसे तो तू ताजी रोटी खिलाती है और मुझे बासी, यह पक्षपात क्यों करती है? माँ ने उत्तर दिया, बेटा, पराया बच्चा मुझे भगवत्स्वरूप दिखाई देता है और तुझमें मेरा मोह है। जिस दिन मैं अपने मोह पर जीत पा लूँगी और तू भी भगवत्स्वरूप दिखाई देने लगेगा, उस दिन यह पक्षपात बंद कर दूँगी।

विनोबा भावे जीवन भर माँ के कृतज्ञ रहे हैं और विनोबा भावे जैसे महान संत को पैदा करने वाली ऐसी साध्वी माता ही हो सकती है। **मोह तो ज़हर है। इस मोह को पीने वाले बच्चे और पिलाने वाले माता-पिता दोनों ही दुखी होते हैं। वास्तव में संतान ईश्वर की अमानत है। श्रेष्ठ संस्कारों से उसे पालना देकर, पाँव पर खड़ा करके हमें पुनः ईश्वर की गोद में समाने का लक्ष्य ले लेना चाहिए। यह एक कठोर साधना है, बहुत बड़ी तपस्या है। जिस घर में ऐसी अनासक्त पालना रूपी तपस्या होती है, वास्तव में वही सच्चा गृहस्थाश्रम है।**

भगवान को पुत्र बनाइये, लोक-परलोक सुधारिए

एक बुजुर्ग व्यक्ति के तीन बेटे थे। उसने संपत्ति का बंटवारा किया तो चार हिस्से किये। तीन हिस्से तीनों बच्चों के और एक हिस्सा भगवान को बेटा बनाकर उसके नाम से किया। तीनों बच्चे पिता के साथ सहमत भी थे और स्वयं भी ईश्वरीय कायदों का पालन करने वाले थे। एक दिन हमने उस बुजुर्ग से पूछा, 'आपकी तो बड़ी मौज है, तीनों ही बच्चे बहुत अच्छे हैं, तीनों ही आपका बहुत सम्मान करते हैं, तीनों के घरों में आपकी बहुत अच्छी सेवा होती है।' उसने कहा, 'तीन ही क्यों, मेरा चौथा बेटा भी बहुत अच्छा है, चौथा यानि कि भगवान, अगर इन तीनों से किसी कारण से कोई बात ऊपर-नीचे हो भी जाये, होगी तो नहीं लेकिन हो भी जाये तो चौथे पर तो अटूट, अटल, अडिग निश्चय है।' सच है, भगवान को पुत्र बनाने वाले का लोक तो क्या परलोक भी सुधर जाता है।

अपनाइये दूरदृष्टि

वर्तमान समय अधिकतर वरिष्ठ नागरिक तनाव, हताशा, निराशा और बेसहारों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उम्र के इस पड़ाव से, आने वाली पीढ़ी को भी गुज़रना है। इस बेसहारा स्थिति के कारणों और उनके निवारणों का भी अध्ययन होना चाहिए और संपूर्ण मानव समाज को इन कारणों और इनके निवारण से अवगत कराना चाहिए। बुजुर्गों द्वारा अपने स्वास्थ्य, धन, चरित्र या संतान को संभालने में जो त्रुटि रही, हमें प्रण करना चाहिए कि हम अपने जीवन में वो त्रुटि नहीं रहंने देंगे। इसी का नाम दूरदृष्टि है। समस्या आने पर नहीं लेकिन उसके आने से पहले ही समाधानों को खोज लेना त्रिकालदर्शी मनुष्य की निशानी है।

दैहिक संतान और रूहानी संतान

कई लोग ब्रह्माकुमार-कुमारियों से यह सवाल पूछते हैं कि आपके आगे-पीछे तो कोई नहीं है, आपके देह की संतान तो होती नहीं है, तो आप वृद्धावस्था में क्या करेंगे, आपकी संभाल कैसे होगी? इसके उत्तर में हम यही कहना चाहेंगे कि दादी प्रकाशमणि जिनकी दैहिक संतान तो कोई भी नहीं थी लेकिन रूहानी संतानों का तो एक लंबा काफिला है। उनके देहत्याग पर उमड़ी भीड़ ने तो यह सिद्ध कर दिया कि दैहिक पुत्रों की भेंट में मानस पुत्र कहीं अधिक सेवामय और भावनामय सिद्ध हो रहे हैं। एक दादी की बात नहीं है। सन् 1936-37 में स्थापित, 73 वर्ष पुरानी इस संस्था में अनेकों बुजुर्ग जा चुके हैं, अनेक वर्तमान समय भी हैं लेकिन जीवन-भर उन्होंने जो सेवा की है, उस पुण्य की बदौलत अनेक सेवाधारी उनकी सेवा के लिए लालायित रहते हैं। उनकी तपस्या और साधना का तेज स्वत: ही सेवा करने वालों को आकर्षित करता है। इससे तो यही सिद्ध हो रहा है कि संतति के मोह-जंजाल में फँसकर की गई पालना से तो साधना और तपस्या में लगाया गया समय अधिक वफादार सिद्ध हुआ।

सभी भाई-बहनों से हमारा नम्र निवेदन है कि वे नौजवान हैं तो अपनी वृद्धावस्था की अभी से योजना बनाएँ और वृद्ध हैं तो अपनी अपेक्षाओं को ईश्वर की ओर मोड़ दें, उन्हें अपना पुत्र बना लें क्योंकि भगवान ही सबसे अधिक वफ़ादार और फ़रमानबरदार पुत्र सिद्ध हो सकता है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ज्ञानामृत

रोहित खुंटे, खुड़ूभांठा (सारंगढ)

दिल से टूटा हुआ, मन का हो जो हारा
एक पन्ना भी पढ़कर उसको, मिल जाये सहारा
हरेक शब्द में इसके जादू, बन गया यह मनमीत

राह दिखाई परमपिता ने, हमने भी जाना है
ज्ञानामृत के हर अक्षर से, खुद को भी पहचाना है
भटकों को नई राह दिखा दे, ज्ञानामृत की रीत

परमधाम से शिवबाबा से, मिलता ज्ञान प्रकाश है
विकट समस्या भी हल कर दे, यह ज्ञानामृत का प्रयास है
पढ़ो ध्यान से, हर अक्षर है इसका गीत-संगीत

माया सांप ने छीन लिया हो जिसके मन का सुकून
विकारों के ज़हर से जब काला पड़ जाए खून
उस आत्मा भाई की जोड़ दे पल में प्रभु से प्रीत
ऐसी ज्ञानामृत पत्रिका बनाए इन्द्रियजीत

गतांक से आगे..

ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा?

• दादी जानकी

बाबा को लौकिक जीवन में भी मैं जानती थी। बाबा को धक से त्याग करते देख मन में आया, मुझे भी मन से ऐसे ही त्याग करना है। बाबा को देखकर सदा ही लगता था, काम कर रहा है पर मूर्ति तपस्वी की है। लगभग 30, 32 वर्षों तक बाबा को देखा है। कितना न्यारा और हम बच्चों का प्यारा है पर हमको भी न्यारे रहने की ट्रेनिंग देता है। डिटैच रहकर दिन-रात उस (शिवबाबा) की स्मृति में रहता है और हमको याद में रहने के लिए वायब्रेशन कितने अच्छे देता है। इतनी सारी ज़िम्मेवारियाँ होते भी कभी हमने बाबा को चिंता-फ़िक्र में नहीं देखा। यहाँ जो सब मुस्कराते दिखाई देते हैं ना, यह बाबा की ट्रेनिंग है कि सब बच्चे सदा मुस्कराते रहो। लोगों की तरह से बहुत हँसना और फिर रोना, यह छोड़ दो। अभी-अभी हँसना, अभी-अभी रोना, यह देह अभिमान है। बाबा से, संसार की कीचड़ में न्यारा रहना सीखा है। आचार, विचार, व्यवहार बड़ा शुद्ध हो, यह भी बाबा से सीखा है। श्वास-श्वास में, हर कदम में बाबा ने स्व पर अटेन्शन खिंचवाया। देवता भी मनुष्य हैं पर उनमें गुण हैं, इसलिए देवता कहलाते हैं। देवता बनने के लिए आपमें भी कोई अवगुण होना नहीं चाहिए, उन्हें निकालें। हर कर्म में गुण होने चाहिएँ।

बाबा ने तीन प्रकार की बातें सुनाई हैं – **अपना मित्र बनो, सबको अपना मित्र समझो, परमात्मा को अपना मित्र बनाओ।** पहले किसको मित्र बनायेंगे? यदि खुद को मित्र नहीं बनाते हैं तो परमात्मा को मित्र बनाने की लगन ज़ोर से नहीं होती है। अपना मित्र बनने से परमात्मा की लगन ज़ोर से लगने से अंदर से सेकण्ड में त्याग हो जाता है। ज्ञान में आने से अंदर की कई बातें, आइने की तरह स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। अपना मित्र बनना अर्थात् पुरुषार्थ की गहरी इच्छा हो। फिर भगवान की शक्ति हमें बड़ी मदद करती है। जो उसी लगन में रहता है, उसको फिर हरेक के लिए स्नेह-रहम की भावना भर जाती है। बाबा में तीनों बातें सदा देखी हैं। हम आत्माओं के प्रति बाबा का बहुत प्यार देखा है, भगवान के लिए भी बहुत प्यार देखा है।

हम ब्रह्मा बाबा को भगवान नहीं समझते पर भगवान की निरंतर स्मृति में बाबा जिस तरह से रहते थे, ऐसा कोई इंसान मैंने देखा ही नहीं है। सदा बाबा को, शिवबाबा के महावाक्यों का सिमरण करते देखा है। भगवान कैसा बनाना, क्या सिखाना चाहता है वो सब ब्रह्मा बाबा के बोल-चाल से स्पष्ट होता था। **संसार में जो कुछ भी होता था, बाबा पर कोई असर नहीं**

होता था। बाबा ने, न महिमा स्वीकार की, न ग्लानि। यज्ञ इतिहास में बाबा की महिमा थोड़ों ने की होगी, निन्दा बहुतों ने की होगी पर बाबा कहते थे, बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोय। किसी को भी बाबा ने शत्रु नहीं समझा। उसका भी भला हो, सदा यही कहा। सच्चा दिल, साफ दिल, बड़ा दिल क्या होता है, वह बाबा में देखा है। बाबा की सच्चाई पर तो हम कुर्बान गए हैं। मैं भी इंसान हूँ, लाखों इंसानों को देखा होगा, इंसान होकर सच बोले! **बाबा को रिंचक मात्र भी जरा-सा मिलावटी बोलते भी नहीं देखा। एकदम ताकत वाला सच जिससे हम कुर्बान हुए कि कितनी अथॉरिटी से, कितना सच बोलता है।** मनुष्य होकर इतना सच बोले, इतना सच्चा व्यवहार रखे, इतनी ऊँची ट्रेनिंग है ये जो इस शक्ति से बहुत ऊँचा उठ सकते हैं। सच्चाई में बड़ी शक्ति है जिस कारण कहते, गॉड इज

ट्रुथ। बाबा के प्यार में भी कितनी शक्ति है!

मैंने बाबा में क्षमाभाव बहुत देखा। इंसान जब भगवान के नज़दीक जाता है तो, जो कर्म पहले ग़लत नहीं दिखते थे, अब ग़लत दिखने लग पड़ते हैं, फिर वह यह भी सोचता है, मैं उनके करीब कैसे जाऊँ? भगवान को सामने रखने वाला व्यक्ति न तो अपने कर्मों में बहाना दे सकता है, न छिपा सकता है। इंसान कोई किसी को क्षमा नहीं कर सकता। देवताओं से भी क्षमा नहीं ले सकते, वहाँ मनोकामना पूर्ण करने जाते हैं, क्षमा वहाँ से भी नहीं मिलती है। क्षमा इंसान भगवान से ही माँगता है। भगवान क्षमा करके अपने करीब आने की शक्ति भरता है। जब तक पाप की क्षमा भगवान से नहीं मिलती तब तक हमारा कदम आगे नहीं बढ़ता है। लोग कहते, भगवान की कृपा चाहिए पर ज़रूरत है कि हम पात्र बनें। अत: पहले आवश्यक है कि हम अपने किए कर्मों की क्षमा लेकर अपने को अंदर से क्लीयर करें। बाबा के पास आये तो हमारे पास्ट को उन्होंने क्षमा दी और आगे बढ़ने की शक्ति दी। जब तक भगवान से क्षमा की भासना नहीं आती, तब तक लिंक नहीं जुटता, मन खाता रहता है। जब आत्मा साफ हो जाती है तो आत्मभाव में टिकना सरल हो जाता है। फिर बाबा का शुक्रिया निकलता है। बाबा ने कभी शुक्रिया भी स्वीकार नहीं किया। सदा यही कहा, बच्चे, तुमने पुरुषार्थ किया, बाबा ने मदद की।

बाबा में यह भी देखा, इतनी उच्च अथॉरिटी, पर नम्रता कितनी! माँ, बाप, सखा – सब रिश्तों का अनुभव। बच्चा जब बूढ़ा हो जाता है तब भी माँ पर हुज्जत रखता है, ऐसे हमने भी रखी है। पिता के ज्ञान, समझ पर हमारा हक लगता है, मुझे ऐसा बनना है। सखा है तो दिल बहुत हलका है। हलके रहने की बाबा ने ट्रेनिंग दी है।

जीत हमारी ही होगी

ब्रह्माकुमारी रीना, राजा का रामपुर (एटा)

मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर ले और उसको पाने के लिए प्रयासरत रहे तो कोई कारण नहीं कि निर्धारित अवधि में वह उस लक्ष्य को प्राप्त न कर सके। मनुष्य केवल दृढ़ संकल्प कर लक्ष्य प्रति लगनशील रहे।

मन में हमेशा रहे कि मुझे मंज़िल पर पहुँचना है, परिस्थिति को पार करते आगे बढ़ना है चाहे कितने भी विघ्न आयें, माया के तूफान आयें लेकिन इनके आगे नहीं झुकना है। तूफान आयेंगे, नाव हिलेगी पर किनारा ज़रूर मिलेगा।

महान लोग लक्ष्य प्राप्ति के लिए कष्ट उठाते ही हैं। यदि महाराणा प्रताप जंगल-जंगल घूमकर भी अपनी स्वतंत्रता व स्वाभिमान बरकरार रख सकते हैं; यदि शास्त्री जी घोर गरीबी व संघर्ष के बावजूद भारत के प्रधानमंत्री बन सकते हैं; यदि मदर टेरेसा विदेशी मूल की होने के बावजूद भारत में महान सेवाकार्य करके संत की उपाधि, नोबल पुरस्कार, भारत रत्न से सम्मानित हो सकती हैं; यदि अब्राहम लिंकन अकल्पनीय गरीबी सहन कर भी अमेरिका के राष्ट्रपति बन सकते हैं; यदि स्वामी विवेकानन्द एकदम विपरीत परिस्थितियाँ होने के बावजूद शिकागो में, भारत के ज्ञान व दर्शन से संपूर्ण विश्व को अवगत करा सकते हैं तो आप भी भविष्य में राजा-पद के अधिकारी बन सकते हैं।

परमात्मा शिव हमारे साथ हैं। लक्ष्य को पाने के लिए दिन मत देखो, भूख मत देखो, थकान मत देखो; देखना है तो अर्जुन की तरह मछली की आँख देखो। अभी समय है, सुनहरा सूरज देखने का, स्वर्णिम सतयुग में उच्च पद पाने का, अपनी उपयोगिता सिद्ध करने का, दुनिया को पापों से मुक्त करने का, विश्व शान्ति लाने का, तो लहरा दो सफलता का परचम। परमात्मा शिव जब हमारा साथी है तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। चाहे विकारों की अक्षौहिणी सेना सामने क्यों न हो, जीत हमारी ही होगी। विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

अपनी हिम्मत से उड़ने के कायल हैं हम,मौसमों की हवा के सहारे नहीं।
रुख हवाओं के मोड़े हैं हमने सदा, हम परिन्दे हवाओं से हारे नहीं।।

‘पत्र’ संपादक के नाम

जून 09 अंक में संपादकीय ‘निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनिए’ अच्छा लगा। मुख से कटुवचन निकलने पर बोलने वाली आत्मा स्वयं को ही कचोटती है। उससे बचने के तीन तरीके जैसे माफी माँगना, समय के लेप से कटु वचनों की विस्मृति तथा यदि माफी न माँग सके तो जरूरतमंदों की सेवा और परोपकार से दुआयें प्राप्त करना – काफी प्रेरणादायी है। यदि धन शुद्ध वृत्ति से न कमाया हुआ हो और दान किया जाये तो भी पुण्य जमा नहीं होता, यह बात भी सही तरीके से धन कमाने के लिए प्रेरित करती है। ब्यूटी पार्लर में जाने से चेहरा तुरंत सुन्दर बनता है परन्तु यह सुन्दरता उतनी ही जल्दी मिटती भी है। स्वाभाविक और टिकाऊ सुन्दरता अल्पकाल में नहीं मिलती, यह बात सदा ही ईश्वरीय ज्ञान-योग के पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करती है।

– अमित लोडम,
हीवरा (बी.के.), बुलढाना

ज्ञानामृत के जुलाई 09 अंक में ‘बेहद की वैराग्य वृत्ति’ लेख पढ़ा, बहुत पसंद आया। हद और बेहद के वैराग्य की परिभाषा बापदादा ने भी समझाई थी पर इस परिभाषा को आपने जिस सरल और सुन्दर रूप में उदाहरण एवं कहानियों के साथ स्पष्ट किया है, उसके लिए आपका सादर आभार। आप यूँ ही सुन्दर, ज्ञानवर्धक लेख लिखकर तथा ज्ञान एवं योग में तीव्रता लाने की युक्तियाँ बताकर हमें लाभान्वित करते रहेंगे, यही हमारी शुभ आश है।

– ब्र.कु. निलेश, रतलाम

ज्ञानामृत पुरुषार्थी भाई-बहनों के लिए सचमुच अमृत साबित हुई है। यह एक शक्ति का काम करती है। जुलाई अंक में ‘प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मेरी नज़र में’ लेख बहुत ही बेमिसाल है। चंद शब्दों में लेखक ने यज्ञ की संपूर्ण वास्तविकता बता दी। ज्ञान को धारण करना, अमृतवेले परमात्मा शिव की प्यार भरी स्मृति में रहना, पवित्र भाव रखना, शुद्ध शाकाहारी भोजन करना, बाबा की मुरली अवश्य सुनना, शरीर की शुद्धि रखना, ज्ञानामृत पढ़ना आदि सभी धारणाएँ हम अपने जीवन में उतारते जायेंगे तो फ़रिश्ते बन जायेंगे। लेख मन को बहुत शक्ति देने वाला साबित हुआ है। सभी लेखकों का बहुत-बहुत अभिनन्दन! ऐसे लेख पढ़कर लगता है जैसे मंज़िल नज़दीक आ गई है।

– ब्र.कु. बालकिशन,
संगम विहार (नई दिल्ली)

जैसे तपती हुई भूमि को वर्षा का इंतज़ार होता है, ऐसे ही ज्ञान रूपी शीतल जल बरसाने वाली ‘ज्ञानामृत’ पत्रिका का विशेष महत्त्व है जो दुखी, अशांत, तपते हुए उर के लिए एक नई ज़िन्दगी का पैगाम लेकर आती है। यह केवल भारत में ही नहीं बल्कि सर्व विश्व की आत्माओं के लिए परमप्रिय परमात्मा शिव बाबा का दिव्य अनुभव कराने वाली पत्रिका है। अनुभवों से भरपूर संस्मरण पढ़कर आत्मा बाग-बाग हो जाती है, खुशियों से नाचने लगती है, इसके लिए कोटिश: बधाई एवं धन्यवाद।

– ब्र.कु. रामलखन, रायपुर

जुलाई 09 अंक में ‘बेहद की वैराग्य वृत्ति’ लेख पढ़ा। बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण कर हम, आकर्षित करने वाली चीज़ों से न्यारे और संसार के प्यारे बन सकते हैं, यह अनुभव हुआ। ‘हद की वैराग्य वृत्ति’ के भी उदाहरण बहुत ही सरल भाषा में दिए गए। अन्तर्मन को सबसे ज़्यादा एकाग्रचित्त करने वाली प्रभावशाली बात यह लगी कि हम एकान्त में बैठकर आकर्षण की उन सभी संभावित चीज़ों को मन के नेत्र के सामने इमर्ज करें और अपने से पूछें, मुझे यह मिल जाए तो मैं उसका क्या करूँगा। इसके नियमित अभ्यास से वैराग्य की मनोभूमि बना सकेंगे और सर्व देह के पदार्थों के आकर्षण से मुक्त हो, प्रभु आकर्षण में निश्चयबुद्धि बन निश्चिन्तता और ट्रस्टीपन का अनुभव कर सकेंगे।

– ब्र.कु. अमृतलाल शर्मा, टोंक

दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

प्रकाश सबको प्रिय लगता है। प्रकाश में कोई भी चीज़ अपने सही रूप में दृष्टिगोचर होती है। अंधकार में ठोकर लगने की, चीज़ का विकृत रूप दिखाई देने की भूल हो सकती है। फिर वह प्रकाश सामूहिक हो, स्थान-स्थान पर हो तो बात कुछ और ही है।

दीपावली भी प्रकाश का पर्व है पर कदाचित यह भीतर के प्रकाश का प्रतीक है। बाहर के प्रकाश में, बाहरी जगत को तो हम प्रतिदिन ही देखते हैं। क्या 364 दिन इंतजार करने के बाद आने वाला यह महापर्व भी हमें बाहरी जगत का ही दर्शन करायेगा? क्या इसके आगोश में ऐसी कोई कीमती चीज़ नहीं है जो इसे अन्य दिनों से पृथकता प्रदान करे? है, इसके पास एक कल्याणकारी, अलौकिक संदेश है – '**अपने भीतर के दीप को जलाओ; घर-घर में हरेक का आत्म-दीप जलाओ; इस आत्म-ज्ञान की रोशनी में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य की अमावस्या को जला दो; शुद्ध स्नेह, शान्ति, संतोष, आत्मिक भाव और नम्रता की पूर्णमासी अर्थात् पूर्णता के युग का आह्वान करो।**'

दीपावली आ रही है। यह अकेली नहीं आती, अपने साथ पर्वों का समूह लेकर आती है। दीपावली से पहले दो पर्व और बाद में दो पर्व। बीच में है दीपावली, आत्म-दीप के पूर्णरूपेण जगमग होने की प्रतीक। प्रथम दो पर्व उस विधि का उल्लेख करते हैं जिससे आत्म-दीप जग उठता है और बाद के दो पर्व उस सुखद परिणाम का वर्णन करते हैं जो आत्म-दीप जग उठने के बाद सामने आता है।

ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार

जैसे किसी नाटक की सर्वप्रमुख घटना वह होती है जब उसका नायक उलझनों को सुलझन में, समस्या को समाधान में और कारणों को निवारण में बदल रहा होता है, उसी प्रकार सृष्टि रूपी महानाटक की सर्वप्रमुख घटना वही है जब इसके महानायक परमपिता परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होकर पाप का नाश कर, पुण्य के युग की स्थापना करते हैं। इसलिए जितनी भी यादगारें, मन्दिर, शास्त्र, त्योहार, व्रत आदि बने हैं, वे भिन्न-भिन्न रूपों से इसी ईश्वरीय कर्त्तव्य का प्रदर्शन और वर्णन करते हैं। दीपावली भी ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार है। जब चारों ओर हिंसा, कामाचार, अपराध, व्यसन, कर्त्तव्यहीनता, गंदगी, स्वार्थ, धोखा, बेईमानी, बेइंसाफी, मैं-मेरा, अहंकार, भ्रष्टाचार आदि का अंधकार छा गया तो भगवान ने ज्ञान-दीप से उसे भगा डाला, इसलिए ईश्वरीय ज्ञान की महिमा के निमित्त है यह पर्व।

धन तेरस

दीपावली से दो दिन पूर्व धन-तेरस नाम से त्योहार मनाया जाता है। इसका संबंध अन्न और स्वास्थ्य से है। वैद्य धनवन्तरि का जन्मदिन इस दिन मनाया जाता है और नई खरीफ की फसल की खीलें तैयार कर, नए बर्तनों में डालकर भगवान को भोग लगाकर बाद में स्वयं उपयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य बहुत बड़ा धन है। कहा जाता है, **पहला सुख निरोगी काया।** काया के निरोग होने पर ही धन या जन का सुख मिल सकता है। आध्यात्मिक साधना के लिए, आत्मा का दीप जलाने के लिए भी काया निरोगी चाहिए। काया को स्वस्थ बनाने के लिए मन और अन्न दोनों सात्विक चाहिएँ। हम केवल एक धन-तेरस के दिन नए बर्तनों में, नया अनाज भगवान को भोग लगाते हैं लेकिन एक दिन के भोग से तो आत्मा का दीप नहीं जल सकेगा। आत्म-दीप तो तब जले जब प्रतिदिन, पवित्र बर्तन में, सात्विक पदार्थों से बने भोजन का कुछ अंश डालकर, प्रकाश पुंज परमात्मा को भोग लगाया जाये और

फिर उस प्रसाद रूप भोजन को परमात्मा की याद में ही स्वीकार किया जाये। **भगवान जब प्रकाश की दुनिया अर्थात् सतयुग का निर्माण करने धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं को शुद्ध-सात्विक प्रसाद रूप भोजन खिला-खिलाकर उनके बुझे दीप को ज्ञान-घृत से प्रज्वलित कर देते हैं। उसी की यादगार है यह धनतेरस का पर्व।**

नरक चतुर्दशी

धन-तेरस से अगले दिन नरक चतुर्दशी मनाई जाती है। पौराणिक कथा है कि नरकासुर नाम के दैत्य ने सोलह हज़ार कन्याओं को बंदी बना लिया था। भगवान ने दैत्य को मारकर उन सोलह हज़ार कन्याओं को मुक्त कराया, इसकी याद में मनाया जाता है यह पर्व। यह कथा भी ईश्वरीय कर्त्तव्य की यादगार है। नरकासुर अर्थात् संसार को नरक बना देने वाला असुर। देह का अभिमान ही नरकासुर है। काम, क्रोध ...ये विकार ही इसकी सेना हैं। सोलह हज़ार कन्यायें उन पवित्र आत्माओं की प्रतीक हैं जो भगवान के गले में माला के रूप में पिरोये जाने योग्य हैं परन्तु अज्ञान के कारण देह-अभिमान के चंगुल में फँस जाती हैं। उन प्रभु-प्रेमी आत्माओं की करुण पुकार सुन भगवान धरती पर अवतरित होते हैं, ज्ञान-दीप जलाकर देह-अभिमान रूपी दैत्य का नाश करते हैं और काम, क्रोध आदि विकारों के बंदीगृह से आत्मा को मुक्त करते हैं।

दीपावली

नरक चतुर्दशी के बाद दीपावली मनाई जाती है। जब देह अभिमान रूपी दैत्य का नाश हो जाता है तो सृष्टि पर देवों का युग आ जाता है। अत: दीपावली है सर्व जगे हुए दीपकों का त्योहार अर्थात् सतयुग का यादगार जहाँ हर देवी-देवता आत्म-स्थित है।

दीपक मिट्टी का बना होता है। पच्चीस या पचास पैसे भर उसकी कीमत होती है परन्तु जब उसमें तेल और बाती डल जाती है और जल उठता है तो पूज्यनीय बन जाता है। उसको नमस्कार किया जाता है, उसकी रोशनी को सिर-माथे से लगाया जाता है। उस प्रज्वलित दीपक पर धन तथा पदार्थ वारी किये जाते हैं, उसे साक्षी मान प्रण किये जाते हैं लेकिन तेल चुकते ही, बाती बुझते ही दीपक को कचरे में फेंक दिया जाता है। मानव शरीर भी मिट्टी के दीपक सदृश ही है, जब इसमें आत्मा रूपी ज्योति प्रवेश हो जाती और ज्ञान रूपी घी से वह ज्योति निरंतर जगमगाती रहती है तो व्यक्ति पूज्यनीय बन जाता है। परन्तु, आत्मा के जाते ही, शरीर की गति मिट्टी के दीपक समान ही हो जाती है। अत: दीपावली है आत्मा की ज्योति ज्ञान-घृत से प्रकाशित कर जीवन को पूज्यनीय बनाने का यादगार। अमावस्या कलियुग का प्रतीक है, प्रकाशित रात्रि सतयुग का प्रतीक है। श्री लक्ष्मी जी का पूजन वास्तव में श्री लक्ष्मी समान श्रेष्ठ लक्षणों को धारण कर देव-पद प्राप्त करने की यादगार है। पूजा के दीपकों में बड़ा दीपक दीपराज परमात्मा शिव की यादगार है, जिसकी ज्योति से अन्य आत्मा रूपी दीपक भी जगमग हो उठते हैं। नये वस्त्र, नये सतयुगी संस्कारों को धारण करने के प्रतीक तथा नये बही खाते, कलियुगी कर्मबन्धन और पाप-खाते को खत्म कर, सतयुगी सुख के संबंध में जाने के प्रतीक हैं।

इस दिन किया जाने वाला दीप-दान, ज्ञान के द्वारा दूसरों को ईश्वरीय मार्ग दिखाने का प्रतीक है। चीनी के बने मीठे हाथी-घोड़े सतयुगी समृद्धि और अखुट खज़ाने, धन-दौलत के प्रतीक हैं। आतिशबाजी, पुरानी कलियुगी आसुरी प्रवृत्तियों के नाश के लिए चलने वाले घातक बमों की प्रतीक है। अंतर्मन की विकारों रूपी कालिमा, ईर्ष्या-द्वेष रूपी मक्खी-मच्छर, इच्छाओं-तृष्णाओं रूपी जाले, हिंसा-कपट रूपी कूड़ा-कर्कट समाप्त करके ही हम सतयुगी स्वच्छ दुनिया का राज-भाग पा सकते हैं इसलिए दीपावली पर घर का

कोना-कोना स्वच्छ किया जाता है। ऐसे स्वच्छ मन वाले लोगों के निवास पर ही पवित्रता की देवी श्री लक्ष्मी का शुभागमन हो सकता है अर्थात् सृष्टि के स्वच्छ होने पर ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण सिंहासनारूढ़ होते हैं। स्वस्तिक का चिह्न, सृष्टि ड्रामा के पाँचों युगों के ज्ञान का प्रतीक है।

गोवर्धन पूजा

दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है। गोवर्धन अर्थात् गउओं का वर्धन। गउएँ समृद्धि की प्रतीक हैं। गउओं से समृद्ध, भारत के आदिकाल में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं। ऐसा भारत पुन: बनाने के लिए भगवान को चाहिए एक अंगुली का सहयोग। भगवान स्वयं भी गोवर्धन पर्वत उठाने रूपी सृष्टि-परिवर्तन के महाकार्य को कर सकते हैं पर अपने बच्चों का भाग्य बनवाने के लिए उनकी उंगली अवश्य लगवाते हैं। उंगली के तीन पोर – तन, मन, धन की शक्ति के प्रतीक हैं। जब हम सब मिलकर ईश्वरीय कार्य में तन, मन, धन से सहयोग देते हैं तो कलियुगी पहाड़ उठ जाता है और हरा-भरा सतयुगी साम्राज्य स्थापित हो जाता है।

भाई-दूज

गोवर्धन पूजा से अगले दिन आती है यम द्वितीया या भाई-दूज। यादगार में दिखाते हैं कि यम और यमुना दोनों भाई-बहन थे। यम, धर्मराज के पद पर सुशोभित हुए। बहन हर वर्ष उन्हें टीका लगाती, मुख मीठा कराती और उनकी दीर्घायु की कामना करती। इसके बदले यम ने वरदान दिया कि इस दिन जो भी बहन अपने भाई को टीका लगाएगी, उसे यम का भय नहीं रहेगा। इस कथा के भी आध्यात्मिक अर्थ हैं। प्रथम तो यह है कि **भगवान जब धरती पर आते हैं तो वे मनुष्यात्मा को सर्व संबंधों का सुख प्रदान करते हैं। आत्मायें उनके साथ भाई और बन्धु का भी नाता जोड़ती हैं और बदले में सतयुग-त्रेतायुग के 21 जन्मों तक अकाल-मृत्यु के भय से मुक्त होने का वरदान प्राप्त करती हैं। दूसरा अर्थ यह है कि भगवान जब धरती पर आते हैं तो मानवात्माओं के बीच, ज्ञान बल से भाई-बहन का पवित्र स्नेह प्रवाहित कर देते हैं जिस कारण सतयुगी सृष्टि में मानव-मानव के बीच तो प्रेम रहता ही है, शेर और गाय भी एक घाट पानी पीते हैं। प्रकृति भी मानव को सुख देती है।** ऐसी स्नेह भरी दुनिया, जहाँ अकाल-मृत्यु प्रवेश नहीं कर सकती, के स्थापित होने का प्रतीक है यह भाई-दूज का पर्व

आइये, प्रण करें, इस पर्व-समूह में जिन मानवीय, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों का सन्देश समाया है, उन्हें हम प्रतिदिन ही जीवन में धारण करेंगे और हर दिन को ही प्रकाश-पर्व बना देंगे।

❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा
(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)
दिनांक : 6, 7, 8 नवम्बर 2009
सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन *(Trained in U.K., Australia and Germany)*
पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें –
डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131
फोन नं. : (02974) 238347/48/49 **फैक्स** : 238570
ई-मेल : ghrcabu@gmail.com **वेबसाइट** : www.ghrc-abu.com

एक दीप जलायें ज्ञान का

• **ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस**

तमसो मा ज्योतिर्गमय – यह हमारी आदि सनातन संस्कृति का बहुत ही प्यारा, सुन्दर, आदर्श वाक्य है जो हमें निरंतर अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए प्रेरित करता रहता है। यह कोई अमावस्या की काली घनघोर रात्रि से पूर्णिमा की रूपहली रात्रि की ओर ले जाने के लिए नहीं कहता वरन् उस कलुषित अन्तर्मन की कालिमा को हटाने के लिए कहता है जिसके कारण सहस्त्रों आँखें दुखों से नम हैं। दीपमाला का पावन पर्व एक ऐसा स्वर्णिम प्रकाश देना चाहता है जिसके आँचल में पसरी हुई हों समग्र सुख-शान्ति की किरणें और संपूर्ण सतयुगी संपन्नता और वैभव।

इस पावन पर्व को किसी ने श्रीराम के राज्याभिषेक के रूप में मनाया, किसी ने समुद्र-मंथन से लक्ष्मी जी को निकलता हुआ पाया। कहीं अमृतघट से अमृत पीने और पिलाने के भी किस्से हैं। कभी नरकासुर के वध के रूप में और कभी महावीर स्वामी के निर्वाण का गवाह बना है यह ज्योतिपर्व परन्तु आज यह वैभव की प्रतीक महालक्ष्मी के पूजन के रूप में समर्पित है।

श्री लक्ष्मी के साथ श्री गणेश व सरस्वती का पूजन भी किया जाता है क्योंकि हमें धन के साथ बुद्धि और सद्विवेक भी चाहिए। व्यापार और नौकरी द्वारा शुभ तरीके से प्राप्त धन का लाभ भी शुभ-लाभ के रूप में पूजा जाता है। उस धन का सदुपयोग भी चाहिए।

दीप पर्व पर फिर से टिमटिमायेंगे नन्हे दीपक, चमकेंगे विद्युत बल्ब, करोड़ों-अरबों रुपये की रंगबिरंगी आतिशबाजी फूकी जायेगी और होगा लक्ष्मी का आह्वान परन्तु..। परन्तु क्या इससे जलेगा किसी के अन्तर्मन का दीप? क्या मिटेगी गरीबी किसी गरीब परिवार की? क्या रोशन हो जायेगा भीतर का चिराग? क्या किलकेंगी किलकारी उस आँगन में जिसे रंगा गया था खून से धर्म, जाति के नाम पर?

भले ही दीप जगमगाइये परन्तु स्वयं की व अन्य आत्माओं की आत्म-ज्योति जलाने का पवित्र संकल्प भी अवश्य रखिए। थोड़ा भी दूसरों के लिए ईर्ष्या, नफ़रत, क्रोध का कलुष (बुराइयों का अंधियारा) यदि मन के किसी कोने में छिपाकर रखा हो, जो स्वयं को व दूसरों को भयभीत करता हो तो उसे आत्म-ज्योति को परमात्म-ज्योति से जोड़कर ज़रूर निकाल भगाइये। **हज़ारों रुपयों को आतिशबाजी की आग में जलाने से अच्छा है कि कम से कम किसी एक अनाथ, गरीब या अभावग्रस्त के जीवन में ज्ञान-दीप और खुशियों का दीप प्रज्वलित कर दीजिए। अपनी ढेर सारी खुशियों में से थोड़ी-सी उन्हें भी बाँट दीजिए। 'चोरी का बाप है जुआ', इसे किसी भी रूप में, किसी भी आँगन में न फटकने दीजिये। जैसे दरिद्रता को, मातायें सूप फटकार कर दीपमाला के बाद निकालती हैं, ऐसे ही इसे भी फटकार कर भगा दीजिये।**

हे आत्मन्, जब जगेगा आत्म-दीपक तब उससे जगेंगे अनेक दीपक। नर्कमय संसार रूपी नरकासुर की जलेगी जब आतिशी, रावण का होगा जब हर मन से अन्त, न रहेगी किसी के प्रति किसी के अन्दर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, जब बनेंगे सभी सच्चे सन्त – तब होंगी खुशियाँ हर घर में, तब मनेगी सच्ची दीपावली। किसी ने ठीक ही कहा है, अंधकार को क्यों धिक्कारें, अच्छा हो, एक दीप जलायें ज्ञान का। ❖

स्नेही पाठकों को आत्मा रुपी दीपक को प्रकाशित करने के यादगार पर्व दीपावली की कोटि-कोटि हार्दिक शुभ बधाइयाँ

पुरुषोत्तम संगमयुग, परिवर्तन की चुनौती और उसी से क्रांति

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परिवर्तन, सृष्टि का अनादि नियम है क्योंकि सृष्टि-चक्र घूमता ही रहता है और हम सब जानते हैं कि परिवर्तन की श्रृंखला में सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग सृष्टि-रंगमंच पर आते ही रहे हैं। अभी संगमयुग है। संगमयुग माना ही मूलभूत परिवर्तन का युग, इसमें हमेशा नई-नई बातें सीखनी पड़ती हैं।

मिसाल के तौर पर, हैदराबाद और कराची में जो भट्ठी चली, इसमें प्यारे शिवबाबा ने स्व के विचार और व्यवहार में परिवर्तन करना सिखाया। बाद में, भारत आ करके प्यारे ब्रह्मा बाबा ने सभी बहनों को समय प्रति समय ईश्वरीय सेवा में भेजा। यह परिवर्तन बहुत बड़ी चुनौती थी। उस समय दादी जानकी जैसी महान विभूति ने भी, पहले, परिवर्तन की यह चुनौती स्वीकार नहीं की, तब ब्रह्मा बाबा ने यही कहा कि आप जैसी दूसरी जानकी मैं कहाँ से लाऊँगा और इस कारण जानकी दादी ने परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार कर लिया। परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयारी भी करनी पड़ी। मातेश्वरी कहती थी कि जब बहनें सेवा पर निकली तब इन्हें आठ आने अर्थात् 50 पैसे क्या हैं, चार आने अर्थात् 25 पैसे क्या हैं, यह हिसाब-किताब सिखाना पड़ा। मैंने मातेश्वरी से पूछा, आपको भी कलियुगी लक्ष्मी का हिसाब-किताब सीखना पड़ा होगा तब मातेश्वरी जी ने कहा कि हाँ, हमारे लिए भी ये हिसाब-किताब आदि परिवर्तन की नई चुनौती थी। मैंने मन में सोचा कि सतयुगी होवनहार लक्ष्मी को भी कलियुग की स्थूल लक्ष्मी की पहचान सीखनी पड़ती है।

आज सारी दुनिया में महंगाई बहुत बढ़ गई है। महंगाई भी समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। आज एक लाख रुपये में मिलने वाली नैनो मोटरकार सबको बहुत सस्ती लगती है। कई लोगों ने अपने नाम रजिस्टर करा दिए हैं, कइयों को तीन साल के बाद एक लाख रुपये की नैनो मोटरकार मिलने वाली है। मैंने फियट मोटरकार सन् 1961 में 11,200 रुपये में खरीदी थी जो उस समय महंगी लगती थी। आज एक लाख रुपये की मोटरकार सस्ती लगती है। इस प्रकार से दुनिया के अर्थशास्त्र में भी परिवर्तन होता रहता है और यह महंगाई कहाँ तक बढ़ती रहेगी, समझ नहीं पड़ता। मेरे एक लौकिक क्लाइंट को 15 लाख रुपये वार्षिक पगार सन् 1955 में मिला तो वित्त मंत्री ने संसद में बताया कि यह सर्वाधिक पगार पाने वाला व्यक्ति है। अभी अमेरिका के सबसे ज्यादा पगार प्राप्त करने वालों की लिस्ट छपी जिसमें कम से कम 1,000 करोड़ रुपये वार्षिक पगारदार सात व्यक्ति थे।

सन् 1974 में मैं आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी के साथ लंदन गया था। वहाँ सतीश मोहन भाई कारोबार के निमित्त थे, उनके घर में टी.वी. को देख दादी जी ने सतीश भाई और मंजू बहन को बुलाकर पूछा, यह टी.वी. क्यों रखा है? तब सतीश भाई को कहना पड़ा कि बच्चों की मांगों को पूरा करने के लिए हमें टी.वी. रखना पड़ता है। यह थी सन् 1974 के यज्ञ की सेवा की नीति। वर्ष 2008-09 की सीजन में अव्यक्त बापदादा ने कहा कि हरेक सेन्टर को टी.वी. के माध्यम से सेवा करने का बजट बनाना चाहिए क्योंकि कई सेवाकेन्द्रों पर, टी.वी. (आस्था चैनल पर 'अवेक्निंग विद ब्रह्माकुमारीज़', सायं 7.10 से 7.40 तक तथा रात्रि 10.30 से 11.00 तक) द्वारा ईश्वरीय सेवा से

बहुत संख्या में वृद्धि हुई है। इसलिए टी.वी. के द्वारा ईश्वरीय सेवा करने की श्रीमत शिवबाबा ने हमें दी। पहले ईश्वरीय सेवा का लक्ष्य संदेश देना था और इसीलिए सेवा की वार्षिक रिपोर्ट में भी यही समाचार आता था कि सारे साल में कितने लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया गया। तब शिव पिता परमात्मा का भी यही डायरेक्शन था कि विनाश के समय कोई ऐसी आत्मा रह न जाये जो उलहना दे कि हे परमात्मा, आप इस सृष्टि पर आये और हमें आपका संदेश नहीं मिला। अब वह संदेश देने की सेवा पर्याप्त हो गई है। अभी सेवा के लक्ष्य में परिवर्तन हुआ है कि जो भी हमारे संपर्क में आएँ, उन्हें संतुष्ट कर दें और संख्या के बदले में वारिस क्वालिटी और वी.आई.पी. क्वालिटी का निर्माण करने का लक्ष्य दिया गया है।

जब कंप्यूटर रूपी साधन नया-नया निकला था तब मैंने आदरणीया दादी जी से पूछा था कि क्या मैं एकाउंटस डिपार्टमेन्ट के लिए कंप्यूटर खरीद करूँ? दादी जी ने छुट्टी दी तो मैंने और भ्राता आनन्द जी ने मिलकर सन् 1985 में यज्ञ सेवा में कंप्यूटर रूपी साधन का प्रयोग शुरू किया।

आज देश-विदेश में कंप्यूटर द्वारा बहुत सेवायें हो रही हैं। सब बहनें-भाई अपने पास कंप्यूटर रखना चाहते हैं। विज्ञान के साधनों में जो परिवर्तन हुआ है उसके परिणामस्वरूप अव्यक्त बापदादा की मुरली देश-विदेश में उसी समय सुनते हैं। इस फायदे के फलस्वरूप हमें इस क्षेत्र में अन्य साधनों द्वारा सेवा बढ़ाने का लक्ष्य रखना चाहिए। साधनों द्वारा सेवा सहज होती है तो उन्हें अपनाना चाहिए।

पिछले सीजन में अव्यक्त बापदादा ने एक मुरली के पश्चात् बड़े भाइयों को यही कहा था कि अंतिम समय अर्थात् विनाश के समय जो सेवा होने वाली है, उसके मुकाबले अभी सेवा में इतनी वृद्धि नहीं हुई है। अंतिम समय की सेवा के लिए विधि-विधान में भी परिवर्तन करना है ताकि सेवा सहज हो सके और सभी उसके द्वारा अपना श्रेष्ठ भाग्य बना सकें। दुनिया के सभी देशों में आई.टी. के द्वारा नई क्रांति आ रही है। लोग नई-नई बातें सीखने की मेहनत कर रहे हैं। आज की मुख्य दस नौकरियाँ, सन् 2003 में नहीं थीं। तीसरे वर्ष में जब विद्यार्थी आता है तो पहले वर्ष में पढ़ा हुआ उसका ज्ञान पुराना हो जाता है। जैसे फैशन बदलता है उसी प्रकार यह क्षेत्र भी दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जा रहा है। ऐसे सुपर कंप्यूटर का निर्माण हो रहा है जो मानवीय दिमाग से भी ज़्यादा पावरफुल होगा। आज एक बड़े अखबार में, एक सप्ताह में जितना समाचार छपता है इतना समाचार 18वीं सदी में सौ वर्ष में भी नहीं छपता था। जापान ने ऐसे फाइबर ऑप्टिक केबल का निर्माण किया है जिसके द्वारा एक सेकंड में 1400 करोड़ शब्द पास हो सकते हैं।

प्रोग्राम बनाने के क्षेत्र में प्रेरणा देने के लिए ही प्यारे बापदादा ने इस वर्ष मेगा कार्यक्रम सभी बड़े स्थानों पर करने की प्रेरणा दी है। ये मेगा कार्यक्रम एक प्रकार से हमें हमारे आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आई.टी. द्वारा नये कदम उठाने की प्रेरणा देने का कार्य करेगा। जैसे आज रेलवे में कहाँ की भी टिकट, किसी भी स्थान पर रिजर्व करा सकते हैं। हमें भी इस संचार पद्धति का उपयोग करना चाहिए। आज भी हमारे घर मुंबई में हम इंटरकॉम के द्वारा, आबू में होने वाली मुरली क्लास, दादियों के प्रवचन सुनते हैं। वह दिन दूर नहीं जब सभी सेवाकेन्द्रों पर, मधुबन में दादी जी जो मुरली सुनाती हैं वही सब उसी समय सुन सकेंगे।

एक जमाने में, आबू में जो मुरली चलती थी, उसे भारत में सब स्थानों पर पहुँचने में दस-पंद्रह दिन लगते थे। विदेशों में दो माह से भी अधिक समय लगता था। अब आबू में जो मुरली चलती है वही मुरली सभी सेवास्थानों पर उसी दिन चलती है। भारत में तो यज्ञ के लाखों रुपयों का खर्च मुरली

छपाकर पोस्ट करने में होता है। विदेश में यह खर्च नहीं होता। लंदन में मुरली का भाषान्तर तैयार करके इंटरनेट पर रखते हैं और सभी सेन्टर वाले उसे डाउनलोड कर लेते हैं। भारत में तो ये सब बातें हमें सीखनी पड़ेंगी। अभी-अभी एक बहन ने हमें कहा कि सेवायें बढ़ने के कारण हमें मुरली की चार कॉपियाँ कम पड़ती हैं, मधुबन से हमें मुरली की छह कॉपियाँ मिलें, ऐसा प्रबन्ध कीजिये। मैंने कहा, आप अपने यहाँ ही मुरलियों की अतिरिक्त कॉपियाँ क्यों नहीं करा लेती। तब बहन को ख्याल आया कि यह तो हो सकता है। कहने का भाव है कि दुनिया जिस गति से आगे बढ़ रही है, उसी गति से सभी क्षेत्रों का फायदा लेना हमें भी सीखना पड़ेगा जिससे हमें 'स्व' के ऊपर पुरुषार्थ करने का ज्यादा समय मिलेगा और हम सब जल्दी-जल्दी संपूर्ण बन जायेंगे। **इस वर्ष आदरणीया दादी जानकी जी ने जन्माष्टमी में यही संदेश सबको भेजा है कि श्री कृष्ण हमारे लिए संपूर्णता का प्रतीक है, हमें इसी लक्ष्य से श्री कृष्ण जन्माष्टमी मनानी चाहिए। हम भी यही चाहते हैं कि हम जल्दी से जल्दी संपूर्ण बन वापस घर जाएँ।**

इस लेख का ध्येय है कि हम ईश्वरीय सेवा के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन कर सेवा के नये-नये प्लान बनायें जिससे ईश्वरीय सेवा सहज बढ़े। ❖

क्रोध नहीं, तरस करो

राजकुमारी मदान, कैथल

मैं ने ब्रह्माकुमारी आश्रम, आबू पर्वत में 4-5 दिनों के प्रवास के दौरान अनेक विषयों पर प्रेरणादायक विचार सुने भी और यत्र-तत्र लिखे हुए पढ़े भी। सभी विचार दैनिक जीवन को सुचारु एवं आनंदपूर्वक जीने में सहायक हैं। एक विशेष विचार 'क्रोध नहीं, तरस करो' ने मेरा ध्यान बार-बार खींचा और मैं इस पर सोचने को विवश हो गई क्योंकि क्रोध करना या क्रोध सहना – इस संबंध में प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना अनुभव है।

यह बात तो सर्वमान्य है कि क्रोध करने वाला व्यक्ति अपना आपा खोकर तनावग्रस्त होकर, खुद से भी अजनबी कुछ पलों के लिए तो हो ही जाता है। वह अपने अमन-चैन को भी खो देता है और दूसरों को भी अशांत कर देता है। वह क्रोध के उन्मादी क्षणों में दाँत पीसने वाला पशु बन कर रह जाता है। ऐसा व्यक्ति सचमुच तरस के काबिल ही तो है।

जब हम दूसरों से अधिक अपेक्षाएँ रखने लगते हैं और जब वे पूरी नहीं होतीं तो निराशा के कारण तनावग्रस्त हो जाते हैं तथा दूसरों पर क्रोध करने लगते हैं। तब हम यह भी भूल जाते हैं कि हम स्वयं भी तो निपुण नहीं हैं, हम भी गलतियाँ करते हैं और दूसरों की अपेक्षायें पूरी नहीं कर पाते हैं। वास्तव में कोई भी 'मिस्टर परफेक्ट' नहीं है।

बार-बार का क्रोध भीतर उमड़ता-घुमड़ता रहकर भी शरीर को घुन लगा देता है और जब यह क्रोध या चिड़चिड़ापन व्यक्त होता है तो सारे घर, दफ़्तर या आस-पड़ोस को भी दुष्प्रभावित करता है। ऐसे में व्यक्ति अशांत रहकर हताशा और निराशा का शिकार होकर अंधेरों से घिर जाता है। कई बार आत्महत्या की भी नौबत आ जाती है। **ऐसी विकट परिस्थितियों से निजात पाने के लिए आध्यात्मिकता का सहारा ज़रूरी है ताकि आत्मिक शांति मिले और क्रोध का स्थान सहनशीलता, प्रेम, पवित्रता तथा आपसी समझ जैसे गुण ले लें।** इन गुणों का विकास माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारी मुख्यालय में तथा अन्यत्र ब्रह्माकुमारी आश्रमों में नियमित तौर पर जाकर ही संभव है जहाँ का वातावरण मनुष्य का कायाकल्प कर सकता है। ❖

मॉरिशियस देश में वृद्धजनों की सेवा

• ब्रह्माकुमार डॉ. महेश हेमाद्री

मॉरीशियस एक सुन्दर द्वीप समूह है। भारत से 6,000 किलोमीटर दूर इस देश की कुल जनसंख्या लगभग 13 लाख है। यहाँ की राजधानी पोर्टलुइस है। देश के चारों ओर सुन्दर, स्वच्छ समुद्र के किनारे हैं तथा हरियाली अति सुन्दर है। इस प्रगतिशील राष्ट्र में मुझे वृद्ध नागरिकों की सेवा करने का निमंत्रण वहाँ के राजयोग सेवाकेन्द्र की निर्देशिका ब्रह्माकुमारी चन्द्रा बहन तथा सामाजिक सुरक्षा तथा कल्याण और वृद्धों के पुनर्वास कल्याण मंत्रालय की तरफ से मिला। इस देश में करीब एक लाख से अधिक वृद्ध हैं। उनके रचनात्मक कार्यों, खेलपाल तथा स्वास्थ्य परिचर्चा के लिए सरकार ने समुद्र किनारे एक सुन्दर रिट्रीट सेन्टर बनाया है। दिनांक 15 जुलाई, 09 को इसी स्थान पर समग्र मॉरीशियस देश के लिए स्वास्थ्य जागृति अभियान 'संतुष्ट वरद् वृद्ध जीवन' का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में मंत्री बहन शीला बापू ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय तथा ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू की तरफ से वृद्ध लोगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण तथा जीवन शैली सुधारने के प्रयत्न की बहुत सराहना की तथा देश के अलग-अलग स्थानों पर वृद्ध लोगों के लिए स्वास्थ्य जागृति प्रवचन करने की मेरी व्यवस्था कराई।

वृद्धावस्था में आने वाली समस्याओं की जानकारी इस स्वास्थ्य अभियान में दी गई। बुढ़ापे में अंगों पर पड़ने वाले प्रभाव तथा उनको परिवर्तन करने का ज्ञान, मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तन, आस्टीयोपोरोसीस, वृद्धावस्था में भोजन का महत्त्व, व्यायाम, घर के वातावरण की सुरक्षा, पारिवारिक सद्भावना, दवाइयों का सही इस्तेमाल आदि विषयों पर भी चर्चा की गई।

एकसौ की आवासीय सुविधा वाले एक वृद्धाश्रम में वृद्ध लोगों से मिलने का सुअवसर मिला। उनके रचनात्मक कार्यों के लिए एक छोटा-सा ऑडिटोरियम भी वहाँ बनाया गया है। भोजन बनाने की व्यवस्था काफी अच्छी है। कई प्रकार के पोषक आहार उनके स्टोर में आते हैं। वृद्धों की संभाल के लिए नर्सिंग स्टाफ भी रखा है। खुशी की बात है कि प्रबंधन समिति के द्वारा एक स्कूल भी वहाँ चलाया जाता है जहाँ स्कूल पूरा होते ही या स्कूल के बीच के समय में बच्चे आकर वृद्धों के साथ मनोरंजन करते हैं। आध्यात्मिक शक्ति और स्थूल सूर्य के प्रकाश से मनुष्य को क्या प्राप्तियाँ होती हैं, इस संबंध में वहाँ हमने जानकारी दी। इस छोटे-से देश में वृद्धों के लिए बहुत सम्मान है। सौ वर्ष के एक बुजुर्ग भाई का जन्मदिन भी मनाया गया और मंत्रालय ने मुझे निमंत्रण दिया। हमने उस भाई को बधाई दी। यहाँ वृद्ध लोगों के लिए वाहनों में आना-जाना मुफ्त है। आयु बढ़ने के साथ-साथ उनका वेतन भी दो गुना, तीन गुना होता जाता है।

ग्यारह दिनों के इस प्रवास में मैं 2,000 से भी अधिक वृद्ध लोगों से मिला। भारत देश की आध्यात्मिकता के प्रति उनमें बहुत रुचि, श्रद्धा और भावना है। सहज राजयोग के अनुसंधान और लाभों के प्रति सकारात्मक भावना है। मॉरीशियस ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन तथा स्थानीय दूरदर्शन ने भी इन कार्यक्रमों को प्रसारित किया। मेरे लौटने से पूर्व मंत्री बहन शीला बापू ने मुझे बधाई दी और कहा कि भविष्य में बहुत बड़े कार्यक्रम का आयोजन करेंगे जिसमें पचास साल की उम्र वाले भी परिवार के साथ लाभ ले सकेंगे। मैं आशा करता हूँ कि प्रगतिशील देशों के परिजनों के लिए यह एक अच्छा प्रेरणादायी कार्यक्रम बन सकता है।

❖

श्वेत की शान

• ब्रह्माकुमारी श्वेता, चरखी दादरी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में नियमित रूप से आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों और उनकी निमित्त शिक्षिका बहनों के श्वेत वस्त्रों को देखकर अक्सर लोग प्रश्न करते हैं कि यहाँ का पहनावा श्वेत ही क्यों? क्या हमें भी इसमें प्रवेश लेने के बाद सफेद वस्त्र ही पहनने होंगे? वे अपनी रंग-बिरंगे वस्त्रों की दुनिया से बेरंग सफेद रंग की दुनिया में नहीं आना चाहते। तो चलिये आज हम आपको इस बेरंग पर बेमिसाल रंग की दुनिया में ले चलते हैं।

निर्मल जीवन की प्रेरणा

श्वेत रंग को सभी रंगों का राजा कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। श्वेत रंग सभी रंगों का सम्मिश्रण है। सूर्य की किरणें सफेद रंग की होती हैं। वे जब प्रिज़्म में से निकलती हैं तो सात रंगों में विभाजित हो जाती हैं। श्वेत रंग स्वयं में सभी रंगों को समाये हुए है। एक-एक रंग एक-एक गुण का प्रतीक है जैसे, ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति। अत: श्वेत रंग सभी गुणों का प्रतीक है। आत्मा जो अपने शुद्ध स्वरूप में श्वेत प्रकाश है, इन सात मूल गुणों को समाहित किये हुए है। जब इन मूल गुणों की मात्रा घटती जाती है तो आत्मा का प्रकाश कम होता जाता है। दूध जिसे पवित्र माना जाता है, उसका रंग सफेद ही होता है। ज़रा-सी खटाई या अशुद्धि से फट जाता है। सफेद कपड़ा और ज़रा-सा दाग, दूसरे का ध्यान तुरंत आकर्षित करता है। तो श्वेत रंग पवित्रता का प्रतीक है जो हमें प्रेरणा देता है कि न सिर्फ हमारे वस्त्र बल्कि हमारा जीवन भी इतना ही निर्मल, धवल, पवित्र हो, रिंचक मात्र भी अशुद्धि या अपवित्रता न हो।

शान्ति का प्रतीक

काला वस्त्र अपने अंदर गंदगी को छिपा लेता है, श्वेत वस्त्र कभी गंदगी छिपाता नहीं। यह रंग हमें बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ अंतर्मन को उजला और स्वच्छ रखने को प्रेरित करता है। सफेद कबूतर शान्ति का प्रतीक माना जाता है। युद्ध के समय शान्ति का संदेश देने के लिए शान्तिदूत के हाथ में सफेद झंडा दिया जाता है। सफेद रंग शान्त रहने और दूसरों को शान्ति का दान देने के लिए कहता है।

हंस सफेद होता है और सफेद मोती चुगता है, कंकड़ छोड़ देता है। सफेद रंग हमें गुण रूपी मोती चुगने और अवगुण रूपी कंकड़ छोड़ने की प्रेरणा देता है। फ़रिश्तों और परियों को भी श्वेत वस्त्रों से लिपटा दिखाते हैं। फ़रिश्ते, जो धरती के आकर्षण से ऊपर होते हैं, हलके होते हैं, उड़ते रहते हैं। श्वेत रंग भी हमें संसार की भौतिक वस्तुओं, वैभवों के आकर्षण से ऊपर उठकर हलके हो उड़ते रहने का संदेश देता है। हम प्रकृति के अधीन न हों बल्कि प्रकृति को अधीन करें।

आकाशमंडल के सूर्य, चंद्र, तारागण भी सफेद रंग के हैं जो निरंतर संसार को प्रकाशित करते रहते हैं। सूर्य छिप जाता है तो चंद्र और तारागण निकल आते हैं। ये संदेश देते है कि हम भी श्रेष्ठ कर्मों द्वारा दूसरे के अंधेरे जीवन को रोशन कर दें।

त्याग और शीतलता का परिचायक

सूर्य की सप्तरंगी किरणें जब किसी वस्तु पर पड़ती हैं तो वह वस्तु जिस रंग का त्याग करती है उसी रंग की दिखाई पड़ती है। अगर सातों रंग अवशोषित कर लेती, कुछ भी त्याग नहीं करती तो काली दिखाई देती है। जो वस्तुयें सातों रंगों का त्याग करती, वे श्वेत दिखाई देती। अत: श्वेत रंग सर्वंश त्याग का परिचायक है।

यह रंग मन को शीतलता प्रदान करने वाला है। श्वेत वस्त्र पहने जब हज़ारों भाई-बहनें एकत्रित होते हैं तो दृश्य देखने योग्य होता है। रंग-बिरंगे वस्त्रों की भीड़ में श्वेत वस्त्र पहने एक व्यक्ति स्वत: सभी का ध्यान आकर्षित कर लेता है। ज्ञान की देवी सरस्वती को श्वेत वस्त्र दिखाते हैं। श्वेत रंग सादगी, सात्विकता,

सरलता का उद्बोधक है।

शारीरिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी सफेद वस्त्र पहनना अच्छा माना जाता है। सफेद वस्त्र शरीर की गर्मी को बनाये रखने में उतना ही सक्षम है जितना कि गर्मी से मुक्त रखने में। सफेद रंग के कपड़े, गहरे रंग के कपड़ों की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में प्रकाश को संप्रेषित करते हैं।

डॉ.जेम्स हार्वे ने एक प्रयोग किया। उन्होंने फलियों वाले पौधों को विभिन्न रंग के कपड़ों से ढका। कपड़ों के सूत एक ही चीज़ के बने थे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने देखा कि काले रंग के कपड़े से ढके पौधे की पत्तियाँ पीली या रंगहीन थी। लाल रंग से ढके पौधे की पत्तियों में अति हल्की हरीतिमा थी। जो पौधा नीले या हरे रंग के कपड़े से ढका था, उसकी पत्तियाँ बहुत कुछ वैसी ही थी जैसी कि काले रंग के कपड़े से ढके पौधे की, पर सफेद रंग के कपड़े से ढकी पत्तियों का रंग स्वाभाविक हरा था। इस प्रयोग के बाद डॉ. जेम्स पूरे वर्ष ही सफेद कपड़े पहनने लगे।

अब आपको विश्वास हो ही गया होगा कि सफेद रंग की महिमा अपरंपार है। अगर अभी भी विश्वास न हो तो एक दिन श्वेत वस्त्र पहनकर देखिये। इन वस्त्रों की अलौकिकता व दिव्यता आपकी अंतरात्मा को भी रूहानियत व दिव्यता से सराबोर कर देगी। ❖

चोट ने निकाला खोट

ब्रह्माकुमार दिनेश कुमार तोमर, मेरठ

सन् 1987 में मेरे पिताजी, माताजी व छोटी बहन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नियमित विद्यार्थी बन गये। उनकी प्रेरणा मुझे भी मिलती रही। सन् 1988 में माताजी का देहांत हो गया। इंटर परीक्षा पास करने के पश्चात् मुझे नागपुर में इंजीनियरिंग की शिक्षा हेतु जाना पड़ा। परिवार से अलग रहकर कुसंग के कारण मुझे धूम्रपान की आदत पड़ गई। वापस मेरठ लौटने पर मुझे राजनीति का चस्का लगा और मैं समाज सेवा करने लगा। भिन्न-भिन्न पदों पर भी एक राजनैतिक दल की तरफ से आरूढ़ हुआ। ख्याति प्राप्त होने पर धूम्रपान के साथ-साथ अन्य व्यसन भी मेरी आदत बन गये। कुसंग का इतना दुष्प्रभाव पड़ा कि मेरी पत्नी, पिता, भाई तथा अन्य संबंधी मुझसे बात करने से भी कतराने लगे परंतु मुझ पर उनके इस व्यवहार का कोई सुधारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। मेरी पत्नी बच्चों सहित अपने पिता के घर जाकर रहने लगी।

एक दिन मैं रिक्शा से जा रहा था, अचानक रिक्शे का रिम टूटने के कारण सड़क पर गिर पड़ा और दाहिनी भुजा में गंभीर चोट आई। भुजा का ऑपरेशन कराना पड़ा। कोई भी विश्वास करने को तैयार नहीं था कि चोट रिक्शा से गिर कर लगी है। सभी कहते थे कि शराब पीकर ही चोट लगी है जिस कारण मुझे आत्मग्लानि हुई और मैंने उसी दिन से शराब न पीने का संकल्प ले लिया और प्रण किया कि अब मुझे अपना जीवन परिवर्तित करके दिखाना ही है। मैंने अपनी यह इच्छा लौकिक पिताजी को बताई। उसी दिन से ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक कोर्स की पुस्तक उन्होंने मुझे दी। ज्ञान का बीज तो बाल्यकाल से मुझमें पड़ा था परन्तु उसके अंकुरित होने का समय अभी आया। मेरा रिक्शा से गिरना ही मेरे लिए सौभाग्यसूचक बन गया। पहले मैंने स्वयं साप्ताहिक पाठ्यक्रम का महीनता से अध्ययन किया और फिर समीप की पाठशाला में निमित्त बहन द्वारा साप्ताहिक कोर्स किया। इसके बाद मैंने नियमित क्लास करनी शुरू कर दी। परमपिता परमात्मा शिव बाबा की शिक्षाओं को पूर्णरूपेण जीवन में धारण करना प्रारंभ कर दिया। आज जब मैं दूसरों को बाबा की शिक्षायें सुनाता हूँ तो सुनने से उन पर कम प्रभाव पड़ता है लेकिन मेरे जीवन में इतनी जल्दी आये परिवर्तन को देख वे भी बाबा के बनने को तैयार हो जाते हैं। अजामिल जैसे मुझ पापी का भी बाबा ने उद्धार कर दिया। आज मुझको देखकर सभी बहन, भाई कहते हैं कि यह तो बाबा का लास्ट सो फास्ट बच्चा बन गया। अब मेरे लौकिक परिवार वाले भी मुझसे खुश हैं और सेवा के सहकर्मी भी। इस प्रकार बाबा ने मेरा जीवन बदल दिया। मैं किन शब्दों में बाबा का शुक्रिया अदा करूँ, वो शब्द मेरे पास नहीं हैं। ❖

हिम्मते मर्दा, मददे खुदा

• ब्रह्माकुमार वी.जे.वराडपांडे, सेवानिवृत्त न्यायाधीश, नागपुर

मैं सन् 1981 में ईश्वरीय ज्ञान में आया। उन दिनों मैं न्यायाधीश के पद पर कार्यरत था। शीघ्र ही मेरा तबादला दमोह में हो गया पर वहाँ कोई सेवाकेन्द्र नहीं था। जैसे ही मैं दमोह पहुँचा, दमोह क्षेत्र के ज़ोन प्रभारी ने मुझे इस नए स्थान पर ईश्वरीय ज्ञान की पाठशाला प्रारंभ करने की ज़िम्मेवारी सौंप दी। क्षण भर के लिए मैं धर्मसंकट में पड़ गया क्योंकि न्यायाधीशों की निष्पक्षता को बनाए रखने के उद्देश्य से, उन पर कई अनुशासन लागू किए जाते हैं। उनमें से एक यह भी है कि वे किसी धर्म-संप्रदाय का सत्संग अपने घर में नहीं चला सकते। इतना होते हुए भी, ईश्वरीय आदेश मानकर मैंने यह ज़िम्मेवारी स्वीकार कर ली।

ईश्वरीय ज्ञान में चलने वाले कुछ भाई-बहनों ने मेरे सरकारी निवास पर ही प्रतिदिन ज्ञान-लाभ के लिए आना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय बाद भाई-बहनों की संख्या इतनी बढ़ गई कि मेरा सरकारी क्वार्टर छोटा पड़ने लगा। मैंने मन ही मन सोचा, ये सभी भाई-बहनें भगवान के बच्चे हैं तो इनके लिए बड़े स्थान का प्रबंध भी भगवान स्वयं ही करेंगे, मैं व्यर्थ चिन्ता क्यों करूँ?

सरकारी अधिकारियों को सरकारी क्वार्टर आवंटित करने का अधिकार कलेक्टर को होता है। मुझे तो क्वार्टर मिल चुका था। इससे अच्छा मिलने की उम्मीद नहीं थी। मैंने कभी कलेक्टर के पास जाकर याचना नहीं की कि मुझे बड़ा क्वार्टर चाहिये क्योंकि ऐसा करने का कोई औचित्य भी नहीं था।

बिना मेहनत समस्या हल हुई

एक दिन उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश दमोह पधारे। हम सब न्यायाधीशगण उनसे मिलने गए। कलेक्टर भी वहाँ आये थे। मुख्य न्यायाधीश को विदाई देने के बाद जब हम आपस में चिटचैट कर रहे थे तो अचानक कलेक्टर बोले, पांडे जी, यहाँ एक बहुत बड़ा बंगला है जिसमें पी.डब्ल्यू.डी. के कार्यकारी अभियन्ता रहते हैं। वह बंगला यदि पसंद हो तो खाली करवा कर आपको आवंटित कर देवें? मैंने कहा, एक क्वार्टर तो मुझे आवंटित किया जा चुका है, अब आप दूसरा क्यों खाली करवा रहे हैं? वे बोले, जो क्वार्टर आपको आवंटित हुआ है, वह वास्तव में कलेक्टर के कार्यालय अधीक्षक के लिये बनाया गया है, आप न्यायाधीश के योग्य मुझे वह नहीं दिखता। मैंने कहा, जो आप उचित समझें, करें।

मेरी सम्मति मिलते ही वह भव्य बंगला मुझे मिल गया। उसमें बड़ा कंपाउण्ड, लॉन और पाँच बड़े-बड़े कमरे थे। हम तो केवल दो ही थे। हमारी व्यक्तिगत आवश्यकता से ज़्यादा जगह थी, मानो अतिरिक्त जगह बाबा ने गीता पाठशाला अर्थ आवंटित कर दी हो। मन कहने लगा, शुक्रिया बाबा! कमाल है आपकी, असंभव को भी संभव कर देते हो। आपकी कमाल तो हम आपके बच्चे ही समझ सकते हैं, और ना समझे कोय। बिना मेहनत, बिना मिन्नत समस्या हल कर दी, वाह बाबा वाह!

निर्विघ्न चला ईश्वरीय कार्य

मेरे हमजोली न्यायाधीश कहने लगे, पांडे जी, आपने कौन-सा जादू का डंडा घुमाया कि इतना बड़ा बंगला आपको आवंटित कर दिया गया। मैंने उनको तो कोई उत्तर नहीं दिया पर मन ही मन सोचा, 'अरे, यह सब भगवान की जादूगरी है।' गीता पाठशाला खुल जाने के कुछ दिन पश्चात् की बात है। गर्मी का मौसम था इसलिये संध्या के समय बाहर बंगले के लॉन में मैं 25 भाई-बहनों की क्लास करा रहा था। मुरली वाचन चल रहा था। इतने में उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार महोदय जी आ पहुँचे। मुरली समाप्त होने तक वे बैठे रहे, स्वागत-सत्कार के बाद

उन्होंने पूछा कि आप यह सत्संग कब से चला रहे हैं? मैंने सारी जानकारी दी। दूसरे दिन पता चला कि वे मेरे विषय में जाँच-पड़ताल करने आये थे तथा विशेष वकीलों से पूछताछ करके चले गये। मुझे स्वयं पर तथा प्यारे शिव बाबा पर पूरा-पूरा विश्वास था। **मन गा उठा, 'जिसका साथी है भगवान, क्या करेगा आंधी और तूफान।' जाँच में उन्हें कोई भी आपत्तिजनक बात नहीं मिली। ईश्वरीय कार्य निर्विघ्न चलता रहा।**

मैं और मेरी युगल सन् 1981 से ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं प्रमाण चल रहे हैं। प्यारे शिव बाबा में अटूट निश्चय है। सेवानिवृत्त होकर सन् 1988 से हम स्थायी रूप से नागपुर में निवास कर रहे हैं। सन् 1980 में हमने नागपुर में अपने मकान में एक किरायेदार रखा था। सेवानिवृत्ति के एक साल पहले उस को नोटिस दिया था कि कृपया मकान खाली कर दें। वह कहने लगा, मैं तो वयोवृद्ध हूँ, कहाँ जाऊँगा, मेरे मरने के बाद ही यह मकान खाली होगा परन्तु उसकी हठधर्मी नहीं चली और उसे मकान खाली करना पड़ा।

शुरू से हमारा संकल्प था कि नागपुर आने के बाद इसी मकान में रहेंगे भी और ईश्वरीय ज्ञान की पाठशाला भी चलायेंगे। क्लीनिक खोलकर, युगल डबल डॉक्टर का पार्ट भी बजायेगी। तदनुसार सन् 1992 में गीता पाठशाला का उद्घाटन आदरणीया दादी मनोहर इंद्रा जी के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ तथा 12 साल गीता पाठशाला चलने के बाद सन् 2005 में इसे उपसेवाकेंद्र का दर्जा प्राप्त हुआ। उपसेवाकेंद्र के रूप में इसकी उन्नति को देख मुझे यही अनुभव हुआ कि बाबा करन-करावनहार है। जो चाहता है, जिससे चाहता है उससे वह कार्य करा ही लेता है और अपने बच्चों पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं आने देता, उन्हें सुरक्षित रखता है। वह केवल हमारे निश्चय और हिम्मत को देखता है और काम करा लेता है। **बाबा का वायदा है, 'हिम्मते बच्चे मददे बाप', सिर्फ 'मददे बाप' नहीं। हिम्मत रखकर चलने वाले को सहज वरदान प्राप्त हो जाता है, मुश्किल सहज हो जाती है, असंभव बात संभव हो जाती है। साहस रखो तो बाप का सहयोग मिल जाता है – मुझे इन महावाक्यों का प्रैक्टिकल में अनुभव हुआ है।** ❖

करते हैं वादा

ब्रह्माकुमार डॉ.पी.सी.श्रीवास्तव, भदोही

रात निःशब्द, छाया घटाटोप अंधियारा
इस कलियुगी तिमिर में है विकारों का पसारा
उग्र है प्रकृति, मानव शोकाकुल सभी
भोग की हर सामग्री, प्राप्त चाहते अभी–अभी
नीरस सारे संबंध हैं, नहीं प्रेम का भाव
मृग–मरीचिका में भ्रमित, दौड़े जाते हैं सभी
त्राहिमाम्! आत्मा का ज़ोर नहीं मन–बुद्धि–संस्कारों पर
रचना हांके जा रही, रचता को निज इशारों पर
बुझी है लौ अब, हैं सब शक्तियाँ क्षीण
रावण ने कर डाला, आबाल–वृद्ध को विदीर्ण
डूब रहे थे हम सभी, पतवार बना आपका संबल
शुक्रिया प्रभु आपका, दे रहे हो आत्मबल
जाग गये हैं हम अभी, औरों को जगायेंगे
करते वादा, संग आपके, दुनिया नई बनायेंगे।

धर्म, अधर्म और स्वधर्म

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

वर्तमान समय देह के धर्म के पीछे अशान्ति व खून खराबा होता आ रहा है और आत्मा के धर्म की अनदेखी हो रही है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आत्मा के स्वधर्म, स्वरूप व इसके पिता का यथार्थ सत्य ज्ञान मनुष्यों को है नहीं। जब स्वयं परमपिता शिव सत्य ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं, तब ही धर्म का स्वरूप व मार्ग प्रकाशित हो पाता है। अज्ञान के आवरण से अधर्म अन्दर (आत्मा में) आता है और सत्य के वरण से स्वधर्म बाहर कर्मों में आता है। 'सत्य' का वरदान एक वरदाता 'शिव' ही दे सकता है।

हजरत मुहम्मद साहब की हदीस में भी वर्णन है कि 'सत्य ही धर्म की पोशाक है।' **वास्तव में शिव ही सत्य हैं और उनके द्वारा पतित-अधर्मी मनुष्यों को दिव्य ज्ञान दे कर जिन गुणों की धारणा कराई जाती है, वही आत्मा की पोशाक है। इस पोशाक को पहनने के लिये परमात्मा एवं आत्मा का अनुभव होना आवश्यक है।**

इस समय संसार में अनगिनत 'दैहिक धर्म' हैं जो द्वापरयुग से विभिन्न धर्मस्थापकों के द्वारा निकले हैं। द्वापरयुग के पहले लंबे समय तक 'पवित्रता, शान्ति, प्रेम' पर आधारित मात्र एक 'आदि सनातन देवी देवता धर्म' था, जिसे स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ने पिछले कल्प के अंत में ब्रह्मा के तन का आधार ले कर स्थापित किया था। उन्होंने 'दिव्य ज्ञान' देकर व 'सहज राजयोग' की विधि के द्वारा पतित मनुष्यों की आत्मा में उनके मौलिक गुणों का आविर्भाव (Emergence) कराया था जिससे उनके सारे विकारी संस्कारों का शोधन (Purification) हो गया था। फिर जब सतयुग का आगमन हुआ तो ये आत्माएँ देवी-देवता के स्वरूप में सामने आईं। उनके कर्म 'अकर्म' थे अर्थात् उनका शुद्ध प्रवृत्ति मार्ग था जिसमें कर्मों का खाता नहीं बनता था। परन्तु त्रेतायुग के अंत में जब कुछ ऐसे कर्मों का ज्ञान हुआ, जो करने योग्य नहीं थे तो निवृत्ति मार्ग सामने आया और 'निवृत्ति' से ही धर्मों का आरंभ हुआ। 'निवृत्ति' अर्थात् अ-धर्म या न धारण योग्य बातों से छुटकारा।

शास्त्रों में वृषभ (नंदी बैल) को 'धर्म' के रूप में दिखलाया गया है जिसके चार पैर 'सत्य', 'शौच (पवित्रता)', 'तप' और 'दान' बतलाये गये हैं। यह बतलाया गया है कि समाज में आई गिरावट को देख कर वह वृषभ जंगल में चला गया। इसके दो भाव हैं। पहला है कि समाज से धर्म के चले जाने से 'अधर्म' का

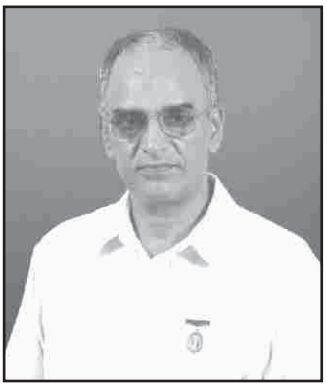

बोलबाला हो जाता है, और दूसरा यह है कि कलियुग में समाज की सारी मर्यादाएँ छिन्न-भिन्न हो जाने से जंगल राज हो जाता है। ऐसे में धर्म को मज़बूरन अधर्म के साथ ही रहना पड़ता है परन्तु वह अपनी शक्ति का सदुपयोग नहीं करता और बैठ जाता है। इसलिये नंदी बैल को भी बैठा हुआ दिखाते हैं जो कि वास्तव में कलियुग की स्थिति है। यह वृषभ सतयुग में चारों पैरों पर खड़ा था अर्थात् वहाँ उपरोक्त चारों ही बातें 'सत्य', 'शौच' (पवित्रता), 'तप' (प्रालब्ध) और 'दान' (एक दूसरे को देने की भावना) थी। त्रेतायुग में वृषभ मात्र तीन पैरों पर खड़ा था और द्वापरयुग में जब यह दो पैर का रह गया तो बैठ गया। कलियुग में इसका एक 'दान' वाला पैर रह गया। आज हम देख भी रहे हैं कि समाज में दान की

(शेष ..पृष्ठ 23 पर)

चुप पहाड़ और खामोश वादियों में 'ब्रह्माकुमारीज़'

• जयशंकर मिश्र 'सव्यसाची', सह-संपादक, 'योग संदेश', हरिद्वार

भारतीय संस्कृति अनादि काल से ही 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की धारणा में गहन आस्था व्यक्त करती आई है। राष्ट्रीय एकता की भावना का समुचित विकास हमें अन्य राष्ट्रों के प्रति सम्मान तथा आदर की भावना से पूरित करता है। एक सच्चा राष्ट्र प्रेमी अन्य राष्ट्रों को भी सम्मान देते हुए उनसे भी भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है और धीरे-धीरे 'अन्तर्राष्ट्रीय एकता' की भावना का समुदय होने लगता है तभी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सूक्ति चरितार्थ होने लगती है। भारत ने ही 'विश्ववाद' का शंखनाद किया था।

भारत में अनेक धर्म हैं, अनेक जातियाँ हैं और लगभग दो सौ बोलियाँ और भाषायें हैं। यह भिन्नता होते हुए भी भारत में एकता का भाव हमेशा रहा है। तभी तो यहाँ के महाकाव्यों, पुराणों में इसे 'भारतवर्ष' कहा गया है। इस देश को ऋषि-मुनियों, राजाओं, राजनीतिज्ञों तथा संत-पीरों ने हमेशा एक माना है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने का गुरुतर कार्य 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' कर रहा है।

सपने तो सभी देखते हैं और उनके बारे में बातें भी करते हैं लेकिन शायद ही ऐसा कोई हो जिसके सपने साकार होते हों। 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' ने भी एक सपना देखा है – आत्मा और शरीर का भेद लोगों को बताते हुए परमात्मा से आत्मा का मिलन कराने का। आखिरकार यह विश्व तो एक रंगमंच ही है और हम सब पात्र हैं। सबको अपना-अपना अभिनय करने के बाद, घर परमधाम ही तो जाना है। यह सपना साकार भी हो रहा है, देश-विदेश के करोड़ों लोग 'राजयोग' से जुड़कर आध्यात्मिक लाभ ले रहे हैं।

अरावली पहाड़ है, हरियाली है, झील की खामोशी भी है। इन सबके साथ मठ-मन्दिर से उपजी भक्ति और आध्यात्मिक शान्ति माउंट आबू के ब्रह्माकुमारीज़ से अधिक कहीं नहीं है। तलहटी (शान्तिवन) से दूर समुद्रतल से 1400 मीटर ऊँचाई पर बसे 'मधुबन', 'ज्ञान सरोवर' में फैली है ओंकार, राजयोग तथा मुरली की तान। यहाँ पर बिखरी खूबसूरती भारत की अनेकता को एकता में समेटे पूरे पहाड़ी क्षेत्र को आध्यात्मिकता के वायब्रेशन से 'योगमय' बनाती है। इन खामोश वादियों में गूंजती 'ओम् शान्ति' की ध्वनि तथा पक्षियों का कलरव अंदर दिल में उतरता चला जाता है। यहाँ से सूर्य का निकलना तथा अस्त होना देखना काफी सुखद है। आसमान में हल्की-सी लालिमा फैलते ही लगता है कि दूर पहाड़ों के पीछे नारंगी रंग आसमान में फैल रहा है, चहचहा कर चिड़ियाएँ पहले ही भुवन भास्कर के आने की सूचना दे देती हैं।

आबू पर्वत स्थित 'ज्ञान सरोवर' आध्यात्मिक और यौगिक शान्ति देता है। यहाँ की हरियाली और खूबसूरती यहाँ की आध्यात्मिक और यौगिक शान्ति में समा जाती है। अरावली पहाड़ी की गोद में बसे 'ब्रह्माकुमारीज़' के पांडव भवन, ग्लोबल हॉस्पिटल, पीस पार्क अपने आप में इतने अनूठे हैं कि आँखें तो थक जायेंगी परन्तु मन नहीं भरेगा।

भगवान शिव ने आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से कहा – **'मेरे प्रिय वत्स! 21वीं सदी आध्यात्मिकता की सदी है। इस सदी में ही भारत को अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त करना है। इसलिए भारत को फिर से देवलोक बनाने के लिए स्वयं के जीवन को निर्विकारी बनाओ तथा दैवी गुणों से संपन्न करो। यदि तुम अपने को ज्योतिस्वरूप आत्मा समझकर मुझ निराकार ज्योतिबिन्दु शिव परमपिता को, मेरे घर परमधाम**

में याद करेंगे तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा और तुम आत्मा सतोप्रधान बन नये दैवी युग, सतयुग में प्रवेश करने के लायक बन जायेंगे।' आप भी 'ज्ञान सरोवर' में आकर योग तथा मुरली द्वारा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का अभ्यास करें, आपका स्वागत है।

मैं सन् 2008 में अपने मित्र सदाराम गुप्त के यहाँ दिल्ली, नरेला गया था। दूसरे दिन उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ के सिन्धी कार्यक्रम में मानेसर जाना था। वे अपने साथ हम लोगों को भी ले गये। वहाँ मैं कुछ घंटे ही रहा परन्तु उन चंद लम्हों में मैं ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ आकर्षित हुआ। वहाँ की पवित्रता, अनुशासन, आध्यात्मिकता का मैं मुरीद हो गया, तभी मैंने निश्चय किया कि मैं माउंट आबू जरूर जाऊँगा।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना जरूरी समझता हूँ कि मैं भी एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था में प्रमुख पद पर कार्यरत हूँ। मैंने 'ज्ञानामृत' पत्रिका के संपादक अग्रज ब्रह्माकुमार श्री आत्मप्रकाश जी और संयुक्त संपादिका बहन उर्मिला जी से टेलिफोन पर बातें की और अगस्त 2009 में शान्तिवन पहुँचा, वहाँ कुछ समय विश्राम करने के बाद माउंट आबू स्थित 'ज्ञान सरोवर' में आयोजित पाँच दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रकृति की खूबसूरती से भरपूर ज्ञान सरोवर स्वास्थ्यवर्धक आबोहवा का धनी है। एकाकीपन तथा आध्यात्मिकता की तलाश में आये सैलानी-साधक यहाँ घंटों बैठकर प्राकृतिक दृश्य निहारकर निहाल हो जाते हैं। यहाँ के हर पर्वत, हर घाटी की अपनी नैसर्गिक छटा है। दैनिक जीवन की भागदौड़ से, क्षीण होती ऊर्जा को पुन: संचित करने के लिए ऐसा ही स्थान चाहिए। 'ज्ञान सरोवर' के ज्ञान में स्नान करके शारीरिक तथा मानसिक ऊर्जा का लाभ मैंने उठाया। यहाँ पहुँचते ही मैं स्वयं को ईश्वरीय सत्ता के करीब महसूस करने लगा। धार्मिक वायब्रेशन से सराबोर हो गया। ब्रह्माकुमारीज़ में ब्रह्माकुमार तथा ब्रह्माकुमारियों का सरल व्यवहार, ऊर्जा से दमकता मुखमंडल वास्तव में दैवी प्रतिभा का आभास कराता है। ईश्वरीय कार्य करते हुए परमात्मा के नेक बंदे आध्यात्मिकता की राह दिखाने में लगे हैं। मैं चला तो आया परन्तु अपना दिल ब्रह्माकुमारीज़ में छोड़ आया हूँ। मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ गया हूँ और जुड़ा रहूँगा तथा ईश्वरीय ज्ञान को विस्तार देने की मैंने ठान ली है। ❖

धर्म, अधर्म.. पृष्ठ 21 का शेष

वृत्ति सभी भक्तों में है। मनुष्य जीवन अमूल्य है। परन्तु आम मनुष्य मानो ऐसे जीवन जी रहा है कि 'जिन्दगी ले आई तो आ गये, मौत ले चली तो चल दिये'। शास्त्रों में यह बात आती है कि पशुओं के चार धर्म – आहार, निद्रा, भय व मैथुन हैं। परन्तु वर्तमान समय ये चार धर्म मनुष्यों पर ज़्यादा लागू हो रहे हैं अर्थात् मनुष्य व पशु में कोई अन्तर नहीं रह गया है। मनुष्यों ने 'असत्य' के मार्ग द्वारा आहार का अर्जन, 'तप' के स्थान पर निद्रा, 'दान' के बजाय 'भय' देना और 'पवित्र (शौच)' रहने के स्थान पर 'मैथुन' से संलग्नता बना ली है। वह मनुष्य जो पहले जंगली पशुओं से डरता था, अब मनुष्य रूपी पशुओं से ज़्यादा डरने लगा है।

अब यदि परमपिता परमात्मा शिव द्वारा सहज राजयोग की दी जा रही शिक्षा के चार विषय – ज्ञान, योग, धारणा व सेवा पर विचार करें तो हम पाते हैं कि 'ज्ञान' ही 'सत्यता' का बोध कराता है, 'योग' ही सच्चा 'तप' है, गुणों की 'धारणा' ही 'पवित्रता' लाती है और नि:स्वार्थ 'सेवा' ही 'दान' है। इन चार विषयों को आत्मसात् करके शरीर रूपी बैल को धर्म के मार्ग पर चलाया जा सकता है। ❖

डूबते को किनारा

• ब्रह्माकुमार अरुण गुप्ता, अररिया (बिहार)

किताबों में पढ़ा था कि समय हर ज़ख़्म को भर देता है लेकिन मुझे ऐसा ज़ख़्म मिला जो लग रहा था कि कभी भरेगा ही नहीं। ज़ख़्म नहीं भरने के दो ही कारण नज़र आते थे – ज़ख़्म बहुत भयानक था या मैं बहुत जज़्बाती था जो भूलने की कोशिश तो करता लेकिन भूल नहीं पाता था।

एक हृदयविदारक घटना

मेरी युगल, चार पुत्रियाँ और एक पुत्र – यह मेरा परिवार था। मेरे दो भाई मुंबई में काफी संपन्न हैं जिनका व्यवसाय एयरकंडीशनर का है। मेरा लड़का मैट्रिक करने के बाद अपने चाचा के पास मुंबई चला गया और उन्हीं के कारोबार में साथ देने लगा। मैं भी परिवार से दूर, हिमाचल प्रदेश में कार्यरत था। अचानक एक दिन मेरे साथ कार्यरत मेरे फुफेरे भाई ने कहा कि आपको कल अपने घर चलना है क्योंकि आपकी माँ की तबीयत बहुत खराब है। यह सुनकर मन में तरह-तरह के विचार चलने लगे कि घर में पता नहीं क्या हो रहा होगा।

वास्तव में कारण यह था कि मेरे इकलौते पुत्र की मुंबई में बिजली का करंट लगने से मृत्यु हो गई थी। घटना का पता मुझे अपने घर अररिया में पहुँचने पर चला। मेरे साथ-साथ सारे घर के लोगों की स्थिति बहुत खराब थी। मुंबई से मेरे भाई पार्थिव शरीर को अररिया ले आये। उस समय मेरे परिवार की ही नहीं बल्कि सारे गाँव के लोगों की स्थिति देखने लायक थी। छोटे-बड़े सभी की आँखों में आँसू और जुबान पर यही शब्द थे कि भगवान आपने यह क्या किया! वह पंद्रह अगस्त का दिन था। घटना का दर्द गाँव वालों को इतना था कि स्वतंत्रता दिवस का झंडा फहराने के बाद गाँव के किसी भी सरकारी संस्थान में कोई कार्यक्रम नहीं हुआ।

मैं हँसमुख व्यक्ति रहा हूँ परन्तु इस घटना के बाद मेरी स्थिति दिनों-दिन खराब होती गई। मैं सोचता था, भगवान ने यह क्या किया, मेरे जीवन को दुखों से क्यों भर दिया? मेरी स्थिति देखकर मेरे परिवार के सभी सदस्यों की खुशी चली गई। समय पर किसी तरह सभी लोग खाना तो खाते थे पर दिन-भर उदास रहते थे। लगता था, जीवन में खुशी कभी लौटेगी ही नहीं लेकिन भगवान को तो कुछ और ही मंजूर था।

जीवन-परिवर्तन का क्षण

घर के बगल में ही ब्रह्माकुमारी आश्रम है। एक बैंककर्मी, संजय भाई (जो मेरे छोटे भाई के मित्र हैं) समय-समय पर मुझे ईश्वरीय पाठशाला में आने का निमंत्रण देते रहते थे लेकिन मैं ईश्वरीय निमंत्रण का कार्ड लेकर रख लेता था और कोई उत्तर नहीं देता था। दिसंबर 25, 2007 को मैं अपनी नातिन के साथ आश्रम के आगे से गुजर रहा था तो नातिन ने कहा, नाना जी, ओम शांति में घूमने चलिये। मैंने कहा, मैं कहीं नहीं जाऊँगा क्योंकि मुझे भगवान पर भरोसा नहीं है। यह कहने के पीछे मेरा पुत्र-मोह ही था क्योंकि पुत्र मुझसे छिन गया था। नातिन फिर बोली, नाना जी, उसमें फूलों का बगीचा बहुत अच्छा है, चलिये ना! छह साल की उस छोटी बच्ची का आग्रह मैं नहीं ठुकरा सका और अन्दर चला गया। अन्दर जाना और वहाँ की भव्यता और दिव्यता को देखना – यही मेरे जीवन का परिवर्तन-क्षण था। क्लास में मुरली चल रही थी, मैं भी वहाँ जाकर बैठ गया लेकिन समझ में तो कुछ भी नहीं आया। हाँ, बैठना अच्छा लगा और एहसास हुआ कि यह अपना ही घर है। मुरली के पश्चात् सभी शांति में बैठे, मैं भी देखा-देखी बैठ गया, जानता तो कुछ नहीं था लेकिन बाबा को अपना बनाना था इसलिए मुझे अजीब-सी खुशी की अनुभूति होने लगी और मैं अपने आपको बाबा की गोद में बैठा हुआ महसूस करने लगा। बाबा ने मुझे गोद में दुलारते हुए कहा, **'बच्चे, अब आ गये अपने अलौकिक परिवार में। तुम्हारा एक बच्चा नहीं रहा तो क्या हुआ, तुम सर्व संबंधों की अनुभूति मेरे साथ कर सकते हो, अब**

तुम्हें वह खुशी जीवन में मिलेगी जिसकी तुमने कल्पना भी नहीं की होगी। सारी दुनिया भगवान को खोज रही है और स्वयं भगवान ने तुम्हें पहले दिन ही अपनी गोद में ले लिया है' – यह अनुभूति मुझे बहुत अच्छी लगी।

अररिया पाठशाला की मुख्य संचालिका बहन जी ने जब सात दिन का कोर्स पूरा करवाया तो मुझे लगा कि मैं अभी तक कहाँ था। मेरे घर के बगल में भगवान का इतना बड़ा कार्य चल रहा है और मैं अभी तक अनभिज्ञ था। तभी मैंने संकल्प किया कि सबसे पहले मैं परिवार के सभी सदस्यों को लाऊँगा। फिर तो अमृतवेले उठ, बाबा से सकाश लेकर उन लोगों को देता रहा और आज सारा परिवार बाबा के ज्ञान में है। अब सभी सदस्यों के मुख से यही निकलता है, 'मेरा बाबा', 'बाबा जाने', 'बाबा के हाथ में सब कुछ है'।

तकदीर बदल गई

वह परिवार जहाँ केवल दुख ही दुख था, बाबा के परिचय से उसकी तकदीर बदल गई। मेरी खुशी को देखकर अड़ोस-पड़ोस के लोग भी बाबा के घर आने लगे। सबसे बड़ा चमत्कार मैंने यह देखा कि मैं बहुत कम पढ़ा-लिखा हूँ लेकिन बाबा ने प्यार भरी पालना देकर मुझे लिखना सिखा दिया। मैं रोज नई-नई कविताएँ लिखने लगा और निमित्त बहन जी को सुनाने लगा। वे तो बाबा के इस कारनामे को जानती हैं। देखिये, कहाँ तो मैं पूरे परिवार के साथ मर जाना चाहता था, पर बाबा की पहचान ने मुझमें जीने की आस जगा दी। इतना बड़ा (अलौकिक) परिवार किसके पास होगा! अब तो सिर्फ अपने अलौकिक परिवार से ही मिलने में आनन्द आता है। हर पल यही दिल से निकलता है, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ! अब तो यही आश है कि किस तरह बाबा की सेवा को आगे बढ़ाऊँ! ज़्यादा से ज़्यादा भगवान के कार्य में सहयोगी बनूँ, यही मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। अब तो मैंने भाग्यविधाता बाप को अपना सर्व संबंधी बना लिया है इसलिए और संबंधी याद भी नहीं आते और दिल में यह गीत गूँजता रहता है –

बाबा आपसे मिलने का
सबके दिल में अरमां नहीं होता
बाबा हर कोई
आपके दिल का मेहमां नहीं होता
जो एक बार
आप के दिल में समा जाये
आपको भूल जाना
उसके लिए आसां नहीं होता ।।

जीवन सुधर गया

बगदीराम मदेल, रतलाम

आबू में क्या गया मैं, जीवन सुधर गया
काबू में था न गुस्सा, जाने किधर गया।
गया था मिलन मनाने, सेवाधारी बनकर
सेवा में पता चला न, समय कैसे गुज़र गया।
नज़ारा न देखा जब तक आबू की धरा का
देखा, समाया आँखों में, अब दिल में उतर गया।
यहाँ न तन्हाई, न गम है, बस खुशियों का आलम है
जो भी गया है आबू, समझो अपने घर गया।
यहाँ ज्ञान और गुणों की बहती हैं सरिताएँ
जिसने लगाया गोता, भवसागर से तर गया।
यहाँ रथ और रथी का, होता अनोखा संगम
जिसने भी सुना, देखा, आश्चर्य से भर गया।
यहाँ स्वर्ग का नज़ारा, आकर तो देखो लोगो
आसमां से नूर ही नूर, जमीं पर बिखर गया।

भौतिक सुख के साधन ही छीन रहे हैं सच्चा सुख

• ब्रह्माकुमार राजू, माउंट आबू

हम सबको चाहना होती है कि हमें सुख, प्यार, मान और खुशी मिले और इनकी प्राप्ति के लिए प्रयास भी करते हैं। लेकिन देखने में आता है कि लक्ष्य को भूलकर हम दूसरी ओर भाग-दौड़ कर रहे हैं। मान लिया कि हमें सुख चाहिए तो हर कर्म करते हुए, सबके साथ चलते हुए सुख पाने का ही लक्ष्य हो अर्थात् हर कर्म से सुख ही उठायें लेकिन होता विपरीत है। हम सुख जुटाने के बजाय सुख के साधन जुटाने में लग जाते हैं और प्यासे मृग की तरह अतृप्ति को लिए आगे बढ़ते जाते हैं। जैसे सुख प्राप्ति के लिए पहले हम टी.वी. लेते हैं, फिर चाहना होती है कि हर चैनल वा प्रोग्राम देखने के लिए डिश चाहिए, फिर कुछ दिन बाद सोचते हैं, अपनी पसन्द अनुसार कुछ देखने वा सुनने के लिए एक डी.वी.डी. प्लेयर भी चाहिए। फिर होगा कि ये सब रखने के लिए एक शोकेस वा अलमारी भी चाहिए। फिर पड़ोसी के घर में नया मॉडल देखकर उस जैसा लाने की इच्छा होगी। इस प्रकार चाहना का अन्त नहीं आता। भौतिक चीज़ें बदलती हैं तो भौतिक दृष्टि वाले मनुष्य की पसन्द भी बदलती है इसलिए घर-घर में साधन भरपूर होते हुए भी मनुष्य दुखी है।

भारी पड़ रहा है टीवी

अगर डनलप के गद्दे पर सोते हुए भी नींद नहीं आती है तो समझ लेना चाहिए कि मन कुछ और माँग रहा है। पहले ये साधन नहीं थे, पर मनुष्य बहुत सुखी थे। भले ही एक पत्र के लिए 15 दिन इन्तज़ार करते थे लेकिन पत्र पाकर गद्‌गद् हो उठते थे। पत्र में भावना होती थी। आज पल भर में हज़ारों मील दूर से बात कर सकते हैं परन्तु वह सुकून कहाँ? मनुष्य अपने नैतिक मूल्यों के आधार से सुख वा दुख के निमित्त बनते हैं। साधनों से सुविधा जरूर मिलती है परन्तु आंतरिक सुख नहीं।

आज विद्यार्थियों की एकाग्रता पर टी.वी. भारी पड़ रहा है। रात को ग्यारह-बारह बजे तक जगने से सुबह के सतोप्रधान समय का फायदा नहीं उठा सकते हैं। नकारात्मक दृश्य सही निर्णय शक्ति को नष्ट कर रहे हैं। मोबाइल का दुरुपयोग अश्लील वार्तालाप, अश्लील एस.एम.एस. आदि में किया जा रहा है। छोटी आयु में ही तनाव, व्यसन, चरित्रहीनता, दंगा आदि के कारण जीवन भार बन जाता है। रोजगार के लिए भागदौड़ बढ़ रही है, फलस्वरूप चारों ओर झूठ, ठगी, धोखा भी तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। अधिक धन वाला, धन के साथ-साथ स्वयं की सुरक्षा के लिए भी परेशान है। व्यसनों और फैशन के कारण घर-घर में तबाही हो रही है। इन सब शोभनिक काँटों की झाड़ियों से अपना जीवन सजाने की चाहना रखने वालों को सिवाय चुभन के और मिलेगा भी क्या?

कहा जाता है कि मानव को जीने के लिए तीन चीज़ें चाहिएँ – रोटी, कपड़ा और मकान परन्तु ज़रा सोचिये, एक कमरे में साल भर के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ और कपड़ा भरकर किसी को दिया जाये, न किसी से मिलने दिया जाये, न कुछ देखने दिया जाये, न कुछ सुनने दिया जाये तो क्या वह ऐसे जीवन से संतुष्ट होगा? शरीर कुछ दिन जिन्दा रह सकता है क्योंकि उसे पाँच तत्वों से बनी चीज़ें चाहिएँ परन्तु आत्मा की भी तो कोई चाहना है। हमें मालूम रहे कि आत्मा सात गुणों (ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द, शक्ति) का चैतन्य स्वरूप है।

पाँच बातों का ज्ञान

आत्मा प्रेम स्वरूप है, किसी व्यक्ति से अगर प्यार का अनुभव होता है तो हम उस पर फ़िदा हो जाते हैं। वही व्यक्ति कुछ दिन के बाद अगर प्यार के बदले गुस्सा प्रदर्शित करे तो उससे भी दिल हट जाती है क्योंकि हमें प्यार चाहिए, व्यक्ति नहीं। सुख के लिए हम पैसा कमाते हैं, सुविधा के साधन जुटाते हैं। आनन्द के लिए हम मनोरंजन के कार्यक्रम,

फिल्म आदि देखते हैं लेकिन देख-देख कर, सुन-सुन कर थक जाते हैं। आत्मा फिर भी प्यासी की प्यासी रह जाती है। इसका कारण यह है कि जब तक यह निश्चय नहीं होगा कि मैं हूँ ही आत्मा, यह शरीर पाँच तत्व का वस्त्र मात्र है तब तक सच्चा सुख नहीं मिलेगा। आत्मा को जानने से सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द का अनुभव हो सकता है परन्तु केवल आत्मज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। इसके साथ कुछ और अलौकिक बातों का ज्ञान भी चाहिए। **हर मनुष्य के दुख का कारण अलग-अलग है। कोई अपने आप से दुखी है, कोई दूसरे के संस्कार वा दूसरे के दुख से दुखी है, कोई समस्या वा अनहोनी से दुखी है, कोई किसी को आगे बढ़ते देखकर दुखी है और कोई अनुमान लगाकर दुखी है। हमें देखना है कि हम किस प्रकार से दुखी हैं। उपरोक्त पाँच प्रकार के दुखों का निवारण करने के लिए पाँच प्रकार का ज्ञान चाहिए। एक है आत्मा का संपूर्ण ज्ञान, दूसरा है परमात्मा का संपूर्ण ज्ञान, उनसे संबंध का अनुभव, तीसरा है कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान, चौथा है सृष्टि रूपी बेहद ड्रामा का ज्ञान और पाँचवाँ है समय का ज्ञान। इन पाँच बातों का गहरा ज्ञान अगर हम समझ लेते हैं तो कोई भी दुख की लहर हमारे मन को स्पर्श नहीं कर सकती है। इस पर गीता में भी एक शब्द है कि ज्ञानी पुरुष न कभी धोखा खाते हैं और न कभी दुखी होते हैं।**

❖

नारी लक्ष्मी, नर नारायण

ऊषा ठाकुर, पूना, मीरा सोसायटी

खुशियों की बहार लेकर, फिर दीवाली आई
बधाई बहनो-भाई, बधाई हो बधाई

घर की करते रहे सफाई, दीवारों को रंग दिया
मन तो वैसा का वैसा ही, मैला और बदरंग रहा
मन को स्वच्छ करें अब अपने, शिव ने युक्ति बताई
बधाई .....

आत्म-रूप की ज्योति जगाकर, प्रभु से नाता जोड़ो
संबंध निभाओ सबसे पर ये मोह के रिश्ते तोड़ो
दीप से दीप जलाने की है, प्रभु ने विधि समझाई
बधाई .....

खुशहाली की स्नेह-मिठाई, खाओ और खिलाओ
मीठी वाणी का मीठा रस, सबको देते जाओ
दुआ करो सबकी खातिर, सबकी करो भलाई
बधाई .....

अशुद्ध संकल्पों की आतिशबाजी, मिलकर चलो जलायें
शुभ संकल्पों के सौरभ से, इस जग को महकायें
शुभ भावना रखें सर्व के लिए, सब हैं अपने भाई
बधाई .....

छोड़ पुराने संस्कारों को, नव-संस्कार हम पहनें
सत् चिन्तन, सत्कर्म और दैवी संस्कृति के गहने
जीवन कमल-पुष्प जैसे सतयुग में, यह याद दिलाने आई
बधाई .....

ज्ञान का धन है सबसे ऊँचा, सब धन का आधार
ज्ञान-लक्ष्मी बनकर बाँटे, ज्ञान के हार-शृंगार
नारी-लक्ष्मी, नर-नारायण, दे ऐसी झलक दिखाई
बधाई .....

टू मीट गॉड

• ब्रह्माकुमार सुमेर सिंह मान, बालोत्रा

सन् 1993 में शिव बाबा ने मुझे काम-क्रोध की जंजीरों से छुड़ाकर अपना बनाया। मुझे पूर्ण विश्वास हुआ कि यही ईश्वरीय ज्ञान सत्य है। इसके बाद नित्य ख्याल रहने लगा कि वह दिन कब आयेगा जब शिव बाबा से सम्मुख मिलन होगा।

आखिर एक दिन वह शुभ घड़ी आ ही गई। उस समय, सन् 1998 में मैं रिकॉर्डस द ग्रीनेडियरज सेन्टर *(Records The Grenadiers Centre)*, जबलपुर में कंप्यूटर सैक्शन में था। सुबह-शाम क्लास करने का शुभ अवसर प्राप्त था। एक दिन सेवाकेंद्र की बहन ने मुझे पूछा, क्या इस बार आपको शिव बाबा से मिलने जाना है? मैंने कहा, दीदी, जाना तो मैं भी चाहता हूँ परन्तु ...। दीदी ने कहा, परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं, जाना ही है। मैंने कहा, दीदी, हमारे विभाग का प्रशासनिक निरीक्षण *(administrative-inspection)* है, इस हालत में छुट्टी मिलना नामुमकिन है। दीदी ने कहा, यह बाबा पर छोड़ दो, आप निमित्त भाव से प्रयास तो करो। मैंने कहा, ठीक है दीदी, मैं प्रयास करता हूँ। ड्यूटी पर पहुँचकर कार्य शुरू किया तो मन में वही बात गूंजने लगी कि शिव बाबा से मिलने जाना है परन्तु छुट्टी कैसे मिलेगी? दूसरी तरफ से आवाज़ आ रही थी, परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं, आप निमित्त भाव से प्रयास कीजिए, शेष बाबा पर छोड़ दीजिये। मैं अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और कंप्यूटर सैक्शन के वरिष्ठ भाई के आगे छुट्टी के लिए अर्ज़ की। उन्होंने कहा, निरीक्षण के समय में छुट्टी कैसे मिल सकती है? मैंने कहा, सर, आप मेरा नाम रजिस्टर में लिख दो और हल्के हो जाओ, जो होगा अच्छा ही होगा।

वरिष्ठ भाई ने चंद सेकंड सोचने के बाद कहा, छुट्टी का कारण क्या लिखें? मैंने कहा, सच ही लिखो, 'टू मीट गॉड *(To meet God)*'। वरिष्ठ भाई हँस पड़ा, बोला, आपका दिमाग खराब हो गया है क्योंकि आप ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाते हैं लेकिन आप बार-बार कहते हैं तो मैं लिख देता हूँ लेकिन आज तक ऐसा कारण किसी ने भी नहीं लिखवाया, कोई बात नहीं, डाँट तो पड़नी ही है परन्तु आपके बाबा की शक्ति भी देख लेते हैं। मैंने कहा, बिल्कुल ठीक।

रजिस्टर में मेरा नाम लिख दिया गया। अधिकारी ने जब रजिस्टर देखा तो एकदम क्रोधित हो गये। मेरी और वरिष्ठ भाई की पेशी हुई। अधिकारी ने मुझसे पूछा, आपका दिमाग ठीक है, आप विवाहित हैं या अविवाहित। मैंने कहा, विवाहित, सर! फिर पूछा, आपकी युगल ज्ञान में है? मैंने कहा, हाँ सर, ज्ञान में है। उन्होंने कहा, आपको पता है, इंस्पेक्शन है और आप छुट्टी माँग रहे हो? मैंने कहा, सर, दे सकते हो तो दे दो, नहीं दे सकते हो तो कोई बात नहीं, शिव बाबा से बाद में मिल लेंगे। उन्होंने कहा, क्या घर जाओगे? मैंने कहा, सर, मैं तो बाबा से मिलने जा रहा हूँ, बीच में घर कहाँ से आ गया? उन्होंने झटके से कलम उठाई और सात दिनों की छुट्टी सैंक्शन कर दी। देखने और जानकारी पाने वाले सभी दंग रह गये। सबका बाबा पर विश्वास जम गया क्योंकि इंस्पेक्शन में छुट्टी असंभव होती है।

इसके बाद मैं मधुबन पहुँचा। मधुबन देखकर मुझे लगा कि मैं अपने असली घर आ गया हूँ। बाबा से मिलन का वर्णन मैं यहाँ नहीं कर रहा हूँ। अगले दिन, दादी प्रकाशमणि जी (उस समय वे साकार थीं) से सौगात लेने का शुभ अवसर आ गया। मैं ज्योंहि उनके सम्मुख पहुँचा, मुझे दादी माँ की भ्रकुटि में चमकती हुई मणि नज़र आई, अपने आपको भूल गया, गद्‌गद् हो गया। मैंने अपने आपको बेहद सौभाग्यशाली माना तथा बाबा को दिल से धन्यवाद दिया।

आज मैं बाडमेर में अध्यापक पद पर हूँ। **स्वयं से, बाबा से, लौकिक व अलौकिक परिवार से बेहद खुश व संतुष्ट हूँ। मुझे बाबा से वह मिला जो दुनिया किसी भी कीमत पर नहीं दे सकती। अहो सौभाग्य, मैं बाबा का, बाबा मेरा। मैंने बाबा को पहचाना, बाबा ने मुझे पहचाना। और क्या चाहिए सब कुछ तो मिल गया।** ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org